Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 36

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

1 सफर 1442 हिज्री कमरी 9 तबूक 1400 हिज्री शम्सी 9 सितम्बर 2021 ई..

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

कंजूसी की मनाही

(1427) हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऊपर वाला हाथ नीचले हाथ से बेहतर है और पहले उनको दो जिनकी तुम परवरिश करते हो और बेहतर सद्क़ा वही है जो ज़रूरत पूरी करने के बाद हो और जो सवाल से बचना चाहेगा अल्लाह उसे बचाएगा और जो नि:स्पृहता हासिल करना चाहेगा अल्लाह उसे नि:स्पृह कर देगा।

(1431) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईद के दिन बाहर आए और दो रकातें पढाई। न उनसे पहले नमाज़ पढ़ी और न बाद। फिर औरतों की तरफ़ मुतवज्जा हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत बिलाला रज़ियल्लाहु अन्हो थे।आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने उन्हें नसीहत की और फ़रमाया कि व: सद्क़ा दें तो कोई औरत अपना कंगन फेंकने लगी और कोई बाली।

(1433) हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हां से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया बांध कर न रखा करो। (खोलो) अन्यथा तुम से रोक लिया जाएगा।

★ उसमान बिन अबी शीबा ने अबदा से रिवायत करते हुए यही हदीस हमसे वर्णन की और ये शब्द कहे : गिनते न रहा करो, अन्यथा अल्लाह तआला भी तुम्हें गिन गिन कर ही देगा।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

देखो कि जब बच्चा रोता धोता है और वेदना प्रकट करता है तो माँ कितना व्याकुल होकर उसको दूध देती है। ख़ुदा तआला के फ़ज़ल तथा उपकार का दूध भी एक रोने को चाहता है, इस लिए उसके हुज़ूर रोने वाली आँख प्रस्तुत करनी चाहिए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

नमाज़ का मूल उद्देश्य और सार दुआ है

मूल उद्देश्य और सार नमाज़ का दुआ ही है। और दुआ ख़ुदा तआला के प्रकृति के क़ानून के अनुसार है। आम तौर पर देखो कि जब बच्चा रोता धोता है और वेदना प्रकट करता है तो माँ कितना व्याकुल होकर उसको दूध देती है। उलूहियत और उबूदीयत में इसी प्रकार का एक सम्बन्ध है जिसको प्रत्येक व्यक्ति समझ नहीं सकता। जब इन्सान ख़ुदा तआला के दरवाज़ा पर गिरता है और अत्यधिक विनम्रता और विनय के साथ गिरता है और अपने हालात को प्रस्तुत करता है और उससे अपनी ज़रूरतों को मांगता है तो उलूहियत का करम जोश में आता है और उस पर रहम किया जाता है

रोना धोना

ख़ुदा तआला के फ़ज़ल तथा उपकार का दूध भी एक रोने को चाहता है,इस लिए उसके हुज़ूर रोने वाली आँख प्रस्तुत करनी चाहिए। यह विचार ग़लत और झूठ है कहते हैं कि ख़ुदा तआला के हुज़ूर रोने धोने से कुछ नहीं मिलता। ऐसे लोग अल्लाह तआला की हस्ती और उस की सामर्थ्यवान वाले गुणों पर ईमान नहीं लाते हैं। यदि वह हक़ीक़ी ईमान पैदा करते तो यह कभी न कहते। जब कभी कोई ख़ुदा तआला के समक्ष आया है और उसने सच्ची तौबा के साथ रुजू किया है। अल्लाह तआला ने उस पर अपना फ़ज़ल किया है। यह बिलकुल सच है जो किसी ने कहा है

आशिक़ कि शुद कि यार बहालश नज़र न कुरद
ए ख़्वाजा दर्द नीस्त वगरन तबीब हसत

अनुवाद: कौन आशिक़ बना कर महबूब ने उस की हालत पर ध्यान न दिया हो, दर्द वाला इन्सान ही नहीं है वर्ना तबीब तो मौजूद है।

ख़ुदा तआला तो चाहता है कि तुम उसके समक्ष पवित्र दिल लेकर आ जाओ। केवल इतनी शर्त है कि उसके यथा योग्य अपने आपको बनाओ और वह सच्चा परिवर्तन करो। ख़ुदा तआला में अदभुत सामर्थय हैं और इस में असीमित फ़ज़ल तथा बरकतें हैं,परन्तु उनके देखने और पाने के लिए मुहब्बत की आँख पैदा करो। अर्थात सच्ची मुहब्बत हो तो ख़ुदा तआला बहुत दुआएं सुनता है और समर्थन करता है। परन्तु शर्त यही है कि मुहब्बत और श्रद्धा ख़ुदा तआला से हो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 320 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

आम तौर पर लोग यह समझते हैं कि इल्हाम हो गया तो हम बड़े आदमी हो गए हालाँकि यह काफ़ी नहीं ख़ाली इल्हाम को नहीं देखा जाएगा बल्कि यह देखा जाएगा कि इस इल्हाम के अंदर अल्लाह तआला की तरफ़ से क्या मुहब्बत का भी प्रकटन है या उस बंदे की शान के इज़हार की भी कोई सूरत है?

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत अल् हिजर नंबर : 9 مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ (क्या उन्हें मालूम नहीं कि) हम (जब भी) फ़रिश्तों को (उतारते हैं तो) हक़ के अनुसार उतारते हैं। और (जब काफ़िरों के लिए उतारते हैं तो) उस वक़्त उन्हें (ज़रा भी) मोहलत नहीं दी जाती, की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

हक़ के अर्थ पहले गुज़र चुके हैं। इस जगह या तो इसके अर्थ सच्चे कलाम के हैं और अर्थ यह है कि फ़रिश्ते कलाम-ए-इलाही के साथ उतरा करते हैं। परन्तु तुम न रसूल हो कि तुम पर फ़रिश्ते उतरें। और न ही तुम इस बात के अधिकारी हो कि तुम्हें कलाम-ए-इलाही से लाभान्वित किया जाए या इस जगह पर हक़ के अर्थ इस्तिहक़ाक़ के हैं। अर्थात जैसा-जैसा किसी का हक़ हो उसके अनुसार फ़रिश्ते उतरते हैं। अल्लाह तआला के नबियों और मौमिनों पर उनके हक़ के अनुसार। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो फ़रिश्ते उतरते हैं वे तो रहमत के फ़रिश्ते हैं। वे मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ही नज़र आ सकते हैं वे इन ख़ुदा तआला का ग़ज़ब सहेड़ने वालों को किस तरह नज़र आ जाएँ उन पर तो जब फ़रिश्ते उतरेंगे ग़ज़ब ही के उतरेंगे और उस वक़्त फ़रिश्तों का देखना उन्हें लाभ नहीं देगा क्योंकि वे उनके हलाक करने के लिए आएंगे और उनके आने के बाद काफ़िरों को ढील नहीं मिलेगी। इसलिए बदर के अवसर पर ये सज़ा देने वाले फ़रिश्ते आए और कुछ कुफ़्फ़ार को कशफ़ी हालत में वे नज़र भी आए परन्तु वह वक़्त उनकी हलाकत का था। उनसे वे क्या फ़ायदा उठा सकते थे।

शेष पृष्ठ 10 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला

बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग 5)

मर्द Well Dressed उस वक़्त कहलाता है जब उसने ट्राओज़रज़ पूरे पहने हों, कोट पहना हो, टाई लगाई हो
और महिलाएं को कहते हैं कि तुम Well Dressed उस वक़्त होगी, जब तुमने मिनी स्कर्ट पहनी हो, यह फ़लसफ़ा मुझे समझ नहीं आया
महिलाऐं जो अपने आपको नंगा करती हैं, अपनी बेइज़्ज़ती करवाती हैं, अहमदी लड़की, अहमदी महिलाएं का सम्मान इसी है कि
अपनी लज्जा को क़ायम करे क्योंकि असल वस्तु लज्जा है और यह लज्जा है जो दूसरों को तुम्हारे पर ग़लत नज़र डालने से रोकती है

नोट : सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न वक़्तों में अपने लेखों और एम.टी.ए के विभिन्न प्रोग्रामों में महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जो आदेश फ़रमाते हैं, उनमें से कुछ पाठकों के लाभ के लिए अलफ़ज़ल इंटरनैशनल के धन्यवाद के साथ प्रकाशित किए जा रहे हैं।(सम्पादक)

प्रश्न : नज़ारत इस्लाह-ओ-इरशाद मर्कज़िया रब्वाह ने हदीस की पुस्तकों में मर्वी पिता की अपनी औलाद के हक़ में दुआ और औलाद के ख़िलाफ़ बद्दुआ दोनों के क़बूल होने के सम्बन्ध में रिवायत और उनके अरबी शब्दों के अलग-अलग शब्दकोष से तशरीह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में पेश कर के रहनुमाई चाही कि उनमें से कौन सी रिवायत और किस अनुवाद को इख़तियार किया जाए? हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 25 फरवरी 2015 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : यदि "पिता की अपनी औलाद के लिए दुआ" अनुवाद कर दिया जाए तो हदीस का अनुवाद स्पष्ट हो जाता है। लेकिन हदीस की पुस्तकों में मर्वी दोनों किस्म की अहादीस अपनी अपनी जगह पर दरुस्त और हमारी रहनुमाई कर रही हैं। दोनों अहादीस को सामने रखें तो मज़मून यह बनेगा कि जिस व्यक्ति की दुआ क़बूलीयत का दर्जा रखती है उस की बद्दुआ भी क़बूल हो सकती है। अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया कि दुआ तो क़बूल करूँगा और बद्दुआ क़बूल नहीं करूँगा।

पिता को अल्लाह तआला ने जो स्थान अता फ़रमाया है इस लिहाज़ से अल्लाह तआला उस की दुआएं भी क़बूल करता है और बद्दुआ भी सुनता है। इसी लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में वालदैन के सम्बन्ध में खासतौर पर फ़रमाया है कि

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ○ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا (बनी इस्राईल : 24-25)

अर्थात तेरे रब ने (इस बात का) कथित हुक्म दिया है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी की इबादत न करो और (तथा यह कि अपने) माँ बाप से अच्छा सुलूक करो। यदि उनमें से किसी एक पर या इन दोनों पर तेरी ज़िंदगी में बुढ़ापा आ जाए तो उन्हें (उनकी किसी बात पर नापसंदीदगी का इज़हार करते हुए) उफ़ तक न कह और न उन्हें झिड़क और उनसे (हमेशा) नरमी से बात कर। और रहम के जज़बा के अधीन उनके सामने विनम्र रवैय्या अख़तियार कर और (उनके लिए दुआ करते वक़्त) कहा कर कि हे मेरे रब इन पर मेहरबानी फ़र्मा क्योंकि उन्होंने बचपन की हालत में मेरी परवरिश की थी।

अत: इन अहादीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें नसीहत फ़रमाई कि पिता की दुआओं से फ़ायदा उठाओ और उस की बद्दुआ से बचोगे।

प्रश्न : गुलशन-ए-वक़्फ़ नौ लजना और नास्रात मेलबर्न तिथि 12 अक्तूबर 2013 ई. में एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से दरयाफ़त किया कि हमें अल्लाह तआला क्यों नज़र नहीं आता? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह तआला एक ऐसी हस्ती है जो नज़र नहीं आ सकती। (हुज़ूर अनवर ने प्रश्न करने वाली बच्ची को सम्बोधित करते हुए छत पर लगे बल्ब की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया) तुम्हें यह बल्ब नज़र आ रहा है नाँ ? और बल्ब की रोशनी (हुज़ूर अनवर ने अपने सामने पड़े मेज़ की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया) यहां पड़ रही नज़र आ रही है। यह किस तरह चल के आ रही है? यह रोशनी तुम्हें वहां से यहां तक आते हुए चलती हुई नज़र आ रही है? (हुज़ूर अनवर ने पुन: बच्ची से पूछा) वह बल्ब की रोशनी है, वह तो चमक रहा है और यहां (मेज़) पर रोशनी पड़ गई। लेकिन जो बीच का फ़ासिला है इस में भी तो कोई चीज़ नज़र आनी चाहिए। जो वहां से चली, यहां पहुंची। मध्य में नज़र आ रही है? (बच्ची ने अर्ज़ किया कि नज़र नहीं आरही। तो हुज़ूर फ़रमाया) नहीं नज़र आ रही नाँ? तो अल्लाह तआला इस से भी ज़्यादा रोशन है और उस की रोशनी ऐसी रोशनी है जो नज़र नहीं आती। हाँ अल्लाह तआला की क़ुदरतें नज़र आती हैं। तुम दुआ करो तो तुम्हारी दुआ कभी क़बूल हुई है? तुमने अल्लाह तआला से कभी दुआ की है? वह पूरी हुई? (बच्ची ने अर्ज़ की कि जी पूरी हुई। हुज़ूर ने फ़रमाया) बस यही अल्लाह तआला का नज़र आना है। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है कि जो ज़मीन है, planet है, universe है, फिर यहां जो सारी creation है, पौदे हैं, vegetation आस्ट्रेलिया तो flora & fauna की बड़ी पसिद्ध जगह कहलाती है। यह सारी चीज़ें अल्लाह तआला की पैदा की हुई हैं। हर चीज़ में देखो। एक plant यहां निकलता है। वैसे कहते हैं कि plant के यदि पत्ते न हों तो जो chlorophyll है, इस के साथ plant की ज़िंदगी बनती है। और पते जो हैं इस में अपना role play कर रहे होते हैं। लेकिन यहां मैंने ऐसे plants भी देखे हैं जो केवल एक stick है और वह stem जो है वही पत्तों का भी role अदा कर रहा है और इस के top के ऊपर एक ख़ूबसूरत सा बड़ा colourful किस्म का फूल लगा हुआ है। तो ये भी अल्लाह तआला की क़ुदरत है। हर चीज़ जो अल्लाह तआला ने बनाई है, उसे देखो और इस पर ग़ौर करो तो वहीं अल्लाह तआला नज़र आता है।

प्रश्न : गुलशन-ए-वक़्फ़ नौ लजना और नास्रात मेलबर्न तिथि 12 अक्तूबर 2013 ई. में एक मैंबर लजना इमाइल्लाह ने हुज़ूर अनवर से दरयाफ़त किया कि वाकिफ़ात नौ लजना की जब शादी होती है और हमारे ऊपर घर की, फ़ैमिली की और बच्चों की ज़िम्मेदारी आती है तो उस वक़्त हम अपने वक़्फ़-ए-नौ होने का role सही तरीक़ा से कैसे अदा कर सकती हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस का उत्तर निमंलिखित शब्दों में अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : वक़्फ़ नौ होने का role सही तरीक़ा से अदा करने के लिए पहले तो जो पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं उनको अच्छी तरह पढ़ो। यदि तहज्जुद पढ़ सकती हो तो वह पढ़ो। क़ुरआन शरीफ़ पढ़ो और इस का अनुवाद पढ़ो। यदि लजना का कोई काम तुम्हारे सपुर्द होता है तो वह जिस हद तक होता है वह करो। फिर सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि जो बच्चे हैं उनकी ऐसी तर्बीयत करो कि उनका अल्लाह से सम्बन्ध पैदा हो जाए। पति को यह realise करवाओ कि मैं वक़्फ़-ए-नौ हूँ और मेरा काम यह है कि अपनी भी तर्बीयत करना और अपने घर की भी तर्बीयत करना, अपने बच्चों की तर्बीयत करना। इसलिए तुम भी इस में मेरा साथ दो। क्योंकि यदि बाप अपना role play न कर रहा हो तो फिर बच्चों की तर्बीयत सही नहीं होती। तो सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी घर की है। और तुम लोगों के लिए यही बड़ा सवाब है। हदीस में आता है कि एक महिला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आई और उसने कहा कि हमारे जो पति हैं जिहाद पर भी जाते हैं और कमाते हैं और चंदे भी देते हैं और मर्द बाहर बहुत सारे ऐसे काम करते हैं जो हम औरतें घरों में नहीं कर सकतीं। तो हमें

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"मैं तो यही पसंद करता हूँ और न बनावट और तकल्लुफ़ से बल्कि मेरी स्वभाव और फ़ित्रत का ही यहीमांग है कि जो काम हो अल्लाह के लिए हो जो बात हो ख़ुदा के वास्ते हो" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

जलसा सालाना बर्तानिया 2021 ई. के अवसर पर मेज़बान (मेहमानी करने वालों) और अतिथियों को अपने कर्तव्य अदा करने तथा कुछ प्रशासनिक कर्यों के विषय में उपदेश

इस युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ही वे उच्च आचरण क़ायम फ़रमाने थे जिस से इस्लाम की सुन्दर तस्वीर हमारे सामने आए और वे हम दुनिया को पेश कर सकें

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मोमिन की यह निशानी बताई है कि वे अतिथि का सम्मान करता है

अतिथि भी इस बात को हमेशा याद रखें कि इस्लाम ने जहां मेज़बान (मेहमानी करने वाला) को अतिथि की इज़्ज़त और सम्मान करने की हिदायत की है

वहां अतिथियों को भी इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाया है कि अतिथि होने की अवस्था में तुम्हारी भी कुछ ज़िम्मेदारी है

जिनको निमंत्रण पत्र और आज़ा पत्र मिले हैं वे सिवाए अशद मजबूरी के ज़रूर जलसा में शामिल हों

अन्यथा उनके न शामिल होने से उन लोगों के अधिकारों का हनन होगी जिनको आज़ा पत्र नहीं दिए गए, मौसम की ख़राबी को बहाना न बनाएँ

लंबे अरसा के बाद मिलना आपको जलसा के प्रोग्राम सुनने से वंचित न कर दे या दुआओं की तरफ़ तवज्जा रखने से वंचित न कर दे,जलसे पर आए हैं तो इस से भरपूर लाभ प्राप्त करें

इन दिनों में ज़िक्र-ए-इलाही अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को मज़ीद खींचने का माध्यम बनता है, इसलिए इन दिनों में ख़ासतौर पर ज़िक्र-ए-इलाही पर-ज़ोर दें

और दुनिया में फैले हुए अहमदी जहां इकट्ठे हो कर जलसा सुन रहे हैं या घरवालों के साथ मिलकर जलसा सुन रहे हैं तो वे भी ज़िक्र-ए-इलाही पर तवज्जा दें ता कि ज़्यादा से ज़्यादा हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को खींचने वाले हों, अपनी रुहानी हालत को बेहतर करने वाले हों और दुनिया की आफ़ात से भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल को खीचते हुए बचने वाले हों

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 6 अगस्त 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज इंशा अल्लाह जलसा सालाना बर्तानिया शुरू हो रहा है। सबसे पहले तो मैं यह कहना चाहूँगा कि इन दिनों में जलसे के हर लिहाज़ से बाबरकत आयोजित होने के लिए बहुत दुआएं करें। अल्लाह तआला इन दिनों में विशेष दीनी माहौल भी रखे और शामिल होने वालों के दिलों को नेकी और तक़्वा में ज़्यादा करे। जबकि आजकल जो महामारी फैली हुई है इस की वजह से यहां शामिल होने वालों की संख्यां बहुत सीमित] है लेकिन घरों में और मुझे बताया गया है कि कुछ जगह जमाअती इंतिज़ाम भी है इस के तहत मसाजिद में या जहां हाल उपलब्ध हैं वहां हालों में जलसा सुना जाएगा। बहरहाल जो भी इस तरह जलसा में शामिल हो रहे हैं वे भी इस सोच के साथ जलसा में शामिल हों कि जैसे कि वे जलसा गाह में ही हैं और तीनों दिन प्रोग्रामों को सुनें और दुआओं में गुज़ारें।

इस साल इस तरह जलसा का इनइक़ाद प्रशासन के लिए भी एक नया अनुभव है और शामिल होने वालों के लिए भी। प्रशासन को जो कुछ सहूलतें अतिथियों के आराम के लिए प्राप्त होती थीं वे इस साल प्राप्त नहीं हो सकें। इस ख़्याल में रहे कि मिल जाएँगी लेकिन नहीं मिल सकीं इसलिए अतिथि या जलसे में शामिल होने वाले भी इन हालात को समझते हुए जहां भी प्रशासन से इंतिज़ामात में कमियां रह गई हैं उनसे अनदेखा करें और दुआ करें कि अल्लाह तआला जल्द हालात बेहतर करे और फिर जलसा अपनी पहली शान के साथ आयोजित हो सके। कुछ लोगों को शिकवा है कि हमें जलसा में कुछ शर्तों की वजह से शामिल नहीं होने दिया गया या कुछ जगह शामिल होने वालों का जो चुनाव हुआ है वह सही नहीं। बहरहाल प्रशासन इस मुआमले में अपना बहाना पेश करता है। अर्थात कुछ मुक़ामी जमाअतों की प्रशासन यह बहाना पेश करती है। पूर्व इसके कि यह बहाना सही है या ग़लत जमात के लोगों से यही कहूँगा कि यहां भी अनदेखा करें और समझें कि पहले तजुर्बे की वजह से कुछ ग़लतियां हो गई होंगी इसलिए माफ़ कर दें और किसी किस्म की रंजिश दिल में न लाएं।

इस बात के बाद मैं जलसा और मेहमान-नवाज़ी के हवाले से कुछ बातें करूँगा। सधारणत: जलसे वाले दिन के ख़ुतबा में मैं अतिथियों को उनकी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ तवज्जा दिलाता हूँ या कुछ प्रशासनिक बातें करता हूँ और जलसा से एक जुमा पहले का जो ख़ुतबा है इस में मेज़बान (मेहमानी करने वालों) और मेहमान-नवाज़ी करने वालों, डयूटी देने वालों के कर्तव्य और ज़िम्मेदारियों के बारे में कुछ कहता हूँ। लेकिन क्योंकि इस दफ़ा पहले डयूटी देने वालों की ज़िम्मेदारियों के विषय में कुछ नहीं कहा इसलिए आज दोनों के लिए कुछ बातें कहूँगा।

पहली बात तो मेज़बान (मेहमानी करने वालों) को यह कहनी चाहता हूँ, डयूटी देने वालों को यह कहनी चाहता हूँ कि हालात की वजह से मेहमान-नवाज़ी में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। इस दफ़ा छ: सात हज़ार अतिथि जो बाहर के देशों से आते थे वे तो नहीं आ रहे। देश के अंदर से ही विभिन्न शहरों से आने वाले अतिथि होंगे और हैं भी बहुत कम संख्यां में। इसलिए इस बात को आसान समझ कर relax न हो जाएं। अगर कहीं कोई कमी रह जाए तो जो क़रीब के अतिथि होते हैं, ताल्लुक़ रखने वाले लोग होते हैं उनको ज़्यादा शिकवा पैदा हो जाता है इसलिए बड़ी एहतियात से और तवज्जा से हर एक की मेहमान-नवाज़ी करें। किसी किस्म की कमी न रहे। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जहां तक बर्तानिया के जलसा के कारकुनान का सम्बन्ध है जैसा कि कल मैंने कारकुनों के inspection के दौरान भी कहा था कि हर वर्ग के कारकुन, लजना में से भी, इतफ़ाल में से भी, ख़ुद्दाम में से भी, अंसार में से भी अपनी डयूटियों और अपने काम में बहुत माहिर हो चुके हैं और बड़ा काम सँभाल लेने की प्रतिभा रखते हैं। नए शामिल होने वाले बच्चों और बच्चियों को भी वे अच्छी तरह काम सिखा सकते हैं इसलिए इस लिहाज़ से तो कोई फ़िक्र नहीं कि काम आता नहीं। जलसा के हर विभाग में बड़ी गहराई से देखकर काम करने वाले कारकुन मौजूद हैं और कर सकते हैं लेकिन क्योंकि अल्लाह तआला का भी हुक्म है कि मोमिन को स्मरण करवाते रहना चाहिए यह उसके लिए लाभदायक है और फिर जैसा कि मैंने कहा कि जलसे का इंतिज़ाम संक्षिप्त है। कई दफ़ा ज़रूरत से ज़्यादा विश्वास कि यह जलसा तो थोड़ी सी संख्यां में हो रहा है इसे तो हम सँभाल ही लेंगे, कुछ उमूर में लापरवाई की वजह से फिर कमी रह जाती है, ख़राबियां पैदा हो जाती हैं और जो नए डयूटियों में शामिल होने वाले हैं वे इस से ग़लत सन्देश भी ले सकते हैं। अत: अतिथियों के आराम के लिए

भी और नए आने वालों को सिखाने के लिए भी यह ज़रूरी है कि चाहे इंतिज़ाम इतना वसीअ नहीं है लेकिन फिर भी हर विभाग का हर काम बहुत अहम है और खासतौर पर आजकल मौसम भी काफ़ी ख़राब है इसलिए भी कुछ विभागों को बहुत ज़्यादा तवज्जा देने की ज़रूरत है।

हर डयूटी देने वाले को यह बात याद रखनी चाहिए कि अतिथि कम हैं या ज़्यादा, जलसे पर आने वाले अतिथि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अतिथि हैं और उनकी हमें जहाँ तक सम्भव हो सके पूरी ख़िदमत करनी चाहिए। मेहमान-नवाज़ी एक ऐसा आचरण है जो नबियों और उनकी जमाअतों का एक विशेष विशेषता है। अत: दीनी जमाअत होने के लिहाज़ से हमारा यह फ़र्ज़ है कि हमारे अंदर मेहमान-नवाज़ी की सिफ़त एक ख़ास रंग रखती हो और यह जो विशेषता है यह और नुमायां हो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में भी जब ज़्यादा अतिथि आने शुरू हो गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा में अतिथि बांट दिया करते थे और सहाबा बड़ी ख़ुशी से अतिथियों को अपने साथ ले जाते थे और जब सुबह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अतिथियों से उनकी रात गुज़रने और सहाबा की मेहमान-नवाज़ी के बारे में पूछते थे, हाल अहवाल पूछते थे, ख़िदमत का हाल पूछते थे तो हर एक का यही उत्तर होता था कि हमने ऐसी ख़िदमत करने वाले मेज़बान (मेहमानी करने वाला) नहीं देखे जिन्हों ने अपना हक़ अदा कर दिया है।

(मसनद अहमद बिन हम्बल भाग 5 पृष्ठ 357 हदीस 15644 प्रकाशन अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई.)

अत: यह उस्वा है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तर्बीयत की वजह से सहाबा ने हमारे सामने और हमारे लिए क़ायम फ़रमाया और इस युग में जब हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है तो आप अलैहिस्सलाम ने भी हमें इस आचरण पर चलने की तलक़ीन फ़रमाई जिसके उदाहरण सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ायम फ़रमाए थे।

एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि मेरे उसूल के अनुसार अगर कोई अतिथि आवे और गाली गलोज तक भी नौबत पहुंच जाए अर्थात अतिथि अगर सख़्त शब्द इस्तिमाल करे और सख़्ती से पेश आए, व्यवहार ठीक न हो तो तब भी उसे गवारा करो। (उद्धरित मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 91)

जबकि यहां आप ग़ैर अतिथियों के बारे में यह नसीहत फ़रमाई थी लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि अतिथि कोई भी हो, अहमदी अतिथि भी हो तब भी एक मेज़बान (मेहमानी करने वाले) का काम है कि उच्च आचरण से काम लिया जाए और सख़्ती का उत्तर सख़्ती से न दें। अपने हों या ग़ैर, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मेहमान-नवाज़ी के हमें ग़ैरमामूली उदाहरण मिलते हैं। अपनों से भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ग़ैरमामूली मेहमान-नवाज़ी का इज़हार फ़रमाया है और क्यों न हो। इस युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ही वे उच्च आचरण क़ायम फ़रमाने थे जिससे इस्लाम की सुन्दर तस्वीर हमारे सामने आए और वे हम दुनिया को पेश कर सकें।

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि मैं एक दफ़ा लाहौर से क़ादियान आया। मुझे हज़रत साहब ने मस्जिद मुबारक में बिठाया जो उस वक़्त तक एक छोटी सी जगह थी। अभी भी छोटी मस्जिद है लेकिन उस वक़्त बहुत ही छोटी थी, एक कमरे के बराबर। फिर फ़रमाया आप बैठिए। मैं आप के लिए खाना लाता हूँ। यह कह कर आप तशरीफ़ ले गए। मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मेरा ख़्याल था कि किसी ख़ादिम के हाथ खाना भेज देंगे लेकिन चंद मिनट के बाद जब खिड़की खुली तो मैं क्या देखता हूँ कि अपने हाथ से थाली उठाए हुए मेरे लिए खाना लाए हैं। एक ट्रे में खाना रखकर मेरे लिए खाना ले के आए हैं। मुझे देखकर फ़रमाया आप खाना खाएं मैं पानी लाता हूँ। मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि बे-इख़्तियार रिक़्क़त से मेरे आँसू निकल आए कि जब हज़रत हमारे गुरु और पेशवा हो कर हमारे लिए यह ख़िदमत करते हैं तो हमें आपस में एक दूसरे की किस क़दर ख़िदमत करनी चाहिए।

(उद्धरित ज़िक्र-ए-हबीब, पृष्ठ 327 लेखक हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो, प्रकाशन क़ादियान)

एक मर्तबा बिस्तरों की कमी हो गई तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपना बिस्तर भी अतिथियों को दे दिया बल्कि घर के सारे बिस्तर दे दिए और ख़ुद सारी रात बग़ैर बिस्तर के तकलीफ़ में गुज़ारी लेकिन किसी को एहसास नहीं होने दिया कि मुझे तकलीफ़ है। (उद्धरित अस्हाब-ए-अहमद, भाग 4, पृष्ठ 180 रिवायत नंबर 76 प्रकाशन रबवाह)

यह है मेहमान-नवाज़ी के लिए असल क़ुर्बानी। कई दफ़ा कुछ लोग क़ुर्बानी कर देते हैं लेकिन यह जता भी देते हैं कि मुझे इस क़ुर्बानी की वजह से कितनी तकलीफ़ हुई।

एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरा हमेशा यह ख़्याल रहता है कि किसी अतिथि को तकलीफ़ न हो बल्कि उस के लिए हमेशा ताकीद करता रहता हूँ कि जहां तक हो सके अतिथि को आराम दिया जाए। फ़रमाया अतिथि का दिल शीशे की भांति नाज़ुक होता है और ज़रा सी ठेस लगने से टूट जाता है। आप हैं कि इस से पूर्व मैंने यह इंतिज़ाम किया हुआ था कि ख़ुद भी अतिथियों के साथ खाना खाता था तो पता लग जाता था कैसी मेहमान-नवाज़ी हो रही है। खाना काफ़ी है, कितना है, हर एक को मिला भी है कि नहीं लेकिन फ़रमाया कि जब से बिमारी की वजह से मुझे परहेज़ी खाना पड़ा तो फिर वह इल्तिज़ाम न रहा और साथ ही एक और वजह भी बन गई कि अतिथियों की अधिकता इस क़दर हो गई कि जगह काफ़ी नहीं होती थी। मुश्किल होती थी कि एक जगह बैठ के सारे खाना खा लें। मुख़्तलिफ़ जगहों पर खाना serve किया जाता होगा या बारी-बारी दिया जाता होगा। इसलिए मजबूरी के कारण अलैहदगी हुई।

(उद्धरित मलफ़ूज़ात, भाग 5 पृष्ठ 406)

फिर आप ने लंगरख़ाने के इंचार्ज को एक मर्तबा फ़रमाया जबकि बहुत से अतिथि आए हुए थे। देखो! बहुत से अतिथि आए हुए हैं। उनमें से कुछ को तुम पहचानते हो कुछ को नहीं। इसलिए मुनासिब यह है कि सबको सम्मानीय जान कर ख़िदमत करो। अत: मेज़बान (मेहमानी करने वाला) के लिए सब अतिथि अतिथि हैं। किसी से कोई भेद भाव वाला सुलूक नहीं करना। यह नहीं कि अमुक ओहदेदार है या अमुक मेरा वाक़िफ़ है तो उस की ज़्यादा ख़िदमत करूँ, इस से ज़्यादा बेहतर सुलूक करूँ। सबको अतिथि समझ कर बराबर ख़िदमत करो। हर अतिथि से इज़्ज़त और सम्मान का सुलूक रखना चाहिए। यही मेहमान-नवाज़ी की जड़ है। आप ने उन्हें फ़रमाया कि तुम पर मेरा हुस्न-ए-ज़न है कि अतिथियों को आराम देते हो इन सबकी ख़ूब ख़िदमत करो। (उद्धरित भाग 6 पृष्ठ 226)

अत: यह वह हुस्न-ए-ज़न है जो आज भी सब ख़िदमत करने वालों पर होना चाहिए और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अधिकतर ख़िदमत करने वाले इस हुस्न-ए-ज़न पर पूरे उतरने वाले हैं और जिनमें कोई कमी है वे ख़ुद अपने जायज़े लें और देखें कि किस तरह वे अपनी कमियां दूर कर सकते हैं और कमी दूर कर के मेहमान-नवाज़ी के मयार को बढ़ा सकते हैं। मुझे इलम है कि कुछ विभागों के कारकुनान को कुछ अतिथियों की तरफ़ से मुश्किलात का सामना करना पड़ता है लेकिन हमारा काम है कि अच्छे आचरण को कभी न छोड़ें। इस का प्रदर्शन करें। अतिथि जो चाहे कह दे हर कारकुन ने अपने पर यह फ़र्ज़ कर लेना है कि अब अपने उच्च आचरण ही दुखाने हैं। इस मर्तबा शायद सीमित संख्यां होने की वजह से कुछ दिक्कतों का कारकुनान को सामना न करना पड़े या कारकुनों का ख़्याल होगा कि नहीं करना पड़ेगा लेकिन कारकुन जब कुछ पाबंदियों की तरफ़ अतिथियों को तवज्जा दिलाएंगे तो हो सकता है कुछ अतिथि बुरा भी मान जाएं। जैसे मास्क पहन के रखना है। इस तरफ़ कारकुनान तवज्जा दिलाएंगे। दूरी दे के रखना है इस तरफ़ तवज्जा दिलाएंगे। आम तौर पर इस की हम पाबंदी नहीं करते। खाना खाते हुए कुछ पाबंदियों का ख़्याल रखना है। लेकिन सब बातें सुनकर भी अगर कोई सख़्ती से पेश आता है और उन बातों की तरफ़ तवज्जा नहीं देता तो लोगों की बातें सुनकर भी प्यार से ही अपनी बात अतिथियों को समझाएँ। साधारणता अतिथियों को भी इस बात की समझ है कि उन्होंने कुछ पाबंदियों का ख़्याल रखना है लेकिन कुछ लोग स्वभाविक रूप से कुछ बातों का जल्द बुरा मान जाते हैं और ऐसे चंद एक ही लोग होते हैं जो कठिनाई पैदा करते हैं और अगर आगे से कारकुन का व्यवहार भी सख़्त हो जाए तो फिर ज़्यादा कठिनाई पैदा होने की सम्भावना है। इसलिए अगर किसी ने समझाना भी है किसी को, कोई दरख़ास्त भी करनी है, कोई बात भी करनी है तो इंतिहाई सब्र और नरमी से समझाएँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मोमिन की यह निशानी बताई है कि वे अतिथि का सम्मान करता है।

(सही मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब باب الحث على اكرام الجار و الضيف ... ، हदीस 173)

मोमिन की यह निशानी है कि अतिथि का सम्मान करता है। अत: यह मोमिनाना विशेषता हर एक में पैदा होनी चाहिए। बारिश की वजह से पार्किंग में, हदीकतुल महदी में सीमित संख्यां में पार्किंग होगी। बारिश की वजह से जबकि कि ग्राऊंडज़ तो हैं लेकिन बारिश की वजह से गीली हैं और कारों के वहां slip होने या धँसने का ख़तरा है। इसलिए दूसरी जगह पार्किंग ली गई है जहां से बसों के माध्यम से अतिथियों को लाया जाएगा। यहां डयूटी वालों को बड़े आराम और प्यार से कारों पर आने वालों को समझाना होगा। कुछ लोग सीधे आ जाते हैं और फिर ज़ोर देते हैं कि हम आ गए हैं तो हमें अंदर आने दिया जाए। बड़े प्यार से उन्हें समझाएँ और अतिथियों को भी डयूटी वालों की बात को समझना चाहिए। आपस के सहयोग से ही काम में आसानी और तेज़ी पैदा हो सकती है।

अत: दोनों तरफ़ से सहयोग होना चाहिए। अतिथि केवल मेज़बान (मेहमानी करने वालों) से उम्मीद न रखें कि यही हमारी ख़िदमत पर मामूर हैं और हमारी हर बात सुनें और इस पर अमल करें बल्कि अतिथियों को भी जो क़ायदा क़ानून बनाया गया है उसकी पाबंदी करनी चाहिए तभी काम सही रंग में और तेज़ी से हो सकता है। अतिथि भी इस बात को हमेशा याद रखें कि इस्लाम ने जहां मेज़बान (मेहमानी करने वाला) को अतिथि की इज़्ज़त और सम्मान करने की हिदायत की है वहां अतिथियों को भी इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाया है कि अतिथि होने की अवस्था में तुम्हारी भी कुछ ज़िम्मेदारी है। इस्लाम ने स्पष्ट बताया कि तुम अतिथि बन कर जब किसी के पास जाओ तो मेज़बान (मेहमानी करने वाला) की व्यस्तता का भी ख़्याल रखो और उस के बुलाने पर जाओ या बता कर जाओ। एक तरफ़ मेज़बान (मेहमानी करने वाला) को हिदायत की कि तुमने घर आए अतिथि से हुस्न-ए-सुलूक करना है चाहे वे जब भी आए। दूसरी तरफ़ अतिथि को कहा कि किसी के घर जाओ तो बता कर जाओ। अगर बग़ैर बताए जाते हो और घरवाला घर के अंदर आने से मना कर दे तो बग़ैर किसी शिकवा के वापस आ जाओ। जलसे के अतिथियों पर उमूमन यह बात लागू नहीं होती लेकिन इस साल जैसा कि मैंने कहा ख़ास हालात की वजह से एक आयु की हद भी रखी गई है कि इस आयु से इस आयु तक के लोग आएं । कम अज़ कम और ज़्यादा से ज़्यादा आयु की हद रख दी और फिर कुछ दूसरी शर्तें भी हैं, शर्तें हैं जो सेहत से सम्बंधित हैं वे भी रखी गई हैं और उनको सामने रखते हुए यह उसूल बनाया गया है और इस लिहाज़ से जमाअतों को कहा गया है कि चुनाव कर के लोगों को, उन लोगों को भेजें जो ये शर्तें पूरी करते हैं। कुछ जगह हो सकता है जैसा कि पहले भी मैंने कहा कि इस चुनाव में ऊंच नीच हो गई हो और कुछ लोगों को शिकवा पैदा हुआ हो। इसी तरह कुछ लोग नए इस मुल्क में आए हैं और शर्तें पूरी नहीं करते लेकिन ज़ोर यह है कि हमें ज़रूर जलसे में शामिल किया जाए। शायद कुछ बाहर से आने वाले कोशिश भी करें कि अपने किसी अज़ीज़ के साथ आ जाएँ या अपने इलाक़े की प्रशासन से ज़िद करें कि हमें शमूलियत का पास दिया जाए तो उनको ख़्याल रखना चाहिए कि इस तरह निज़ाम को तोड़ने से मसायल पैदा होते हैं।

अल्लाह तआला ने एक मोमिन के लिए यह उसूली हिदायत फ़र्मा दी है और बुनियादी अख़लाक़ की राहनुमाई कर दी और हुक्म दे दिया कि घर वालों की इजाज़त के बग़ैर किसी के घर न जाओ और अगर कहा जाए कि वापस चले जाओ तो वापस चले जाओ बग़ैर किसी शिकवे के। अल्लाह तआला फ़रमाता है وَاِنۡ قِيۡلَ لَـكُمُ ارۡجِعُوۡا فَارۡجِعُوۡا هُوَ اَزۡكٰى لَـكُمۡ(नूर: 29) और अगर तुम्हें कहा जाए कि वापस चले जाओ तो तुम वापस चले जाओ। तुम्हारे लिए यह बात ज़्यादा पाकीज़गी वाली है। जलसे पर आना और इस में शामिल होने का एक बहुत बड़ा मक़सद तो अपनी इस्लाह और अपने नफ़्स को पाक करना है। ज़बरदस्ती शामिल होने की बजाय जो तरीक़ निर्धरित कर दिया गया है इस की पाबंदी करनी ज़्यादा पाकीज़गी वाली बात है। अत: कुछ लोग जिन्हों ने मुझे भी पीछे पड़ कर पत्र लिखे हैं या निज़ाम को भी कह रहे हैं वे लोग जो भी इंतिज़ाम निर्धरित कर दिया गया है इस की पाबंदी करें तो यह ज़्यादा बेहतर है और बुरा भी नहीं मानना चाहिए। इस बात का शिकवा भी नहीं करना चाहिए। अल्लाह तआला से यह दुआ करें और ऐसे हालात में ज़्यादा तड़प कर दुआ होती है और होगी कि अल्लाह तआला हालात जल्द मामूल पर लाए ताकि कुछ लोग अपनी ख़ाहिश के अनुसार जलसे में आज़ादी से शामिल हो सकें। क़ुरआन के आदेशों पर अमल करने के लिए सहाबा का भी अजीब तरीक़ था। एक सहाबी कहते हैं कि मैं सालों लोगों के घरों में मुख़्तलिफ़ वक़्तों में बेवक़त केवल इसलिए जाता रहा कि कोई मुझे कहे कि यह वक़्त नहीं है। अंदर आना मना है। हम नहीं मिल सकते। घर में आने की इजाज़त नहीं दे सकते। मुलाक़ात नहीं हो सकती। वापस चले जाओ और कहते हैं कि मेरी यह ख़ाहिश थी कि कोई मुझे इस तरह कहे तो मैं क़ुरआन-ए-करीम के इस हुक्म पर अमल कर के सवाब कमाने वाला बन जाऊं लेकिन कभी ऐसा नहीं हुआ कि मैं किसी के घर गया हूँ और आगे से मुझे मना कर दिया गया हो।

(तफ़सीर दारुल मंसूर भाग 6 पृष्ठ 175-176 दारुल फ़िक्र बेरूत 2011 ई.)

तो दोनों फ़रीक़ मेज़बान (मेहमानी करने वाला) भी और अतिथि भी अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए अपने कर्तव्य पूरे करने की कोशिश करते थे। उमूमी अख़लाक़ के अपनाने और क़ुरआन-ए-करीम की हिदायत पर-शौक़ और जज़्बे से अमल करने के ज़िमन में मैं ने यह बात बताई और एक उसूली हिदायत दी है लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं कि अपनी बात मनवाने के लिए कह देते हैं या कह देंगे कि फिर प्रशासन को भी इन्कार नहीं करना चाहिए। उमूमी हालात में प्रशासन इन्कार नहीं करती और न करना चाहिए। अगर करे तो यक़ीनन अतिथियों का हक़ अदा नहीं करेगी और इस तालीम के ख़िलाफ़ करेगी जो इस्लाम की तालीम है और जिसकी तालीम पर अमल करने पर हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ास ज़ोर दिया है और अपने अमल से मिसालें क़ायम की हैं कि बेवक्त रात गए अतिथि आए तो उस वक़्त भी उनकी मेहमान-नवाज़ी का सम्मान फ़रमाया। लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि यह जलसा जिन हालात में हो रहा है ये ख़ास हालात हैं इस में मजबूरन अतिथियों को शमूलियत से इन्कार किया जा रहा है। इसलिए बग़ैर किसी शिकवे के इस पर अमल कर लिया जाए लेकिन साथ ही में इन लोगों को यह भी कहना चाहता हूँ कि जिनको निमंत्रण पत्र और आज्ञा पत्र मिले हैं कि सिवाए अशद मजबूरी के ज़रूर जलसा में शामिल हूँ अन्यथा उनके न शामिल होने से उन लोगों के अधिकारों का हनन होगा जिनको आज्ञा पत्र नहीं दिए गए। मौसम की ख़राबी को बहाना न बनाएँ।

मौसम की ख़राबी की बात हुई है तो शामिल होने वालों को याद रखना चाहिए कि रबवाह या क़ादियान में सर्दियों के दिनों में खुले में जलसे आयोजित होते हैं। रबवाह में तो अब पाबंदियों की वजह से नहीं होते। सालों से नहीं हुए लेकिन हुआ करते थे और जब सर्दियों में जलसा होता था तो फिर लोग बारिश की सूरत में भी आराम से बैठ कर किसी न किसी माध्यम से अपने आपको ढांक कर जलसा सुनते थे। यहां जब इस्लामाबाद में जलसे होते थे तो बारिश की वजह से जलसा गाह की मारकी के बावजूद भी बहुत बुरा हाल हो जाता था। नीचे बैठने के लिए केवल घास रखा जाता था। नीचे बाक़ायदा कोई फ़र्श नहीं बनाया जाता था जिस तरह अब लकड़ी का बनाया जाता है। मुझे याद है कि एक जलसा में में शामिल हुआ तो बारिश की वजह से जलसा गाह के अंदर भी कुछ हिस्से में पानी आ गया और ज़मीन गीली हो गई। किनारों पर तो पानी खड़ा था और जो लोग किनारों पर खड़े हो के नमाज़ पढ़ते थे उनके घुटने और माथे पानी में होते थे या कीचड़ में होते थे। ख़ुद मेरे साथ भी इसी तरह हुआ और सज्दे से सिर उठा कर पहले माथा साफ़ करना पड़ता था कि आँखों में पानी या कीचड़ न आ जाए या घास फूस लगा होता था लेकिन सब लोग मैं ने देखा है एक जज़्बे से जलसे में शामिल होते थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब भी यह भावना है और कहना चाहिए कि अहमदियों की तक़रीबन अक्सरियत में यह भावना मौजूद है लेकिन कुछ ज़रा नाज़ुक-मिज़ाज भी होते हैं या हालात की वजह से अब समय की दूरी की वजह से नाज़ुक-मिज़ाजी आ गई है उन के लिए मैं कह रहा हूँ कि अगर उनको आने का आज्ञा पत्र मिला है तो वे ज़रूर शामिल हों। किसी किस्म का बहाना न बनाएँ। फिर यह भी है जैसा कि पहले भी मैंने कहा कि कुछ लोग स्वभाविक रूप से लड़ने वाले होते हैं, कुछ अपनी आदत के अनुसार शिकवा करने वाले भी हैं और प्रशासन पर नुक्ता-चीनी करेंगे कि यह इंतिज़ाम इस तरह होना चाहिए था इस तरह क्यों नहीं हुआ? या न आने का बहाना पेश करेंगे कि इस वजह से हम नहीं आए तो बहरहाल इन बातों का ख़्याल रखना चाहिए। आज भी और कल भी और परसों भी जिन लोगों को निमत्रण पत्र मिले हैं या कहना चाहिए जिन लोगों को आज्ञा पत्र मिले हैं वे ज़रूर शामिल हों।

कुछ प्रशासनिक बातें भी कर दूं कि खाने की मारकी में प्रशासन ने खाना लेते हुए और खाना खाते हुए जो दूरी रखने की तरफ़ तवज्जा दिलाने का इंतिज़ाम किया हुआ है उस की पाबंदी करें। जगह जगह यह लिख कर लगाया हुआ है कि दूरी रखें लेकिन कुछ लोगों को जो भी हिदायत लगाई जाए उसे पढ़ने की आदत नहीं है, इस तरफ़ तवज्जा नहीं करते और फिर यह भी आजकल आम हालात में भी उमूमन देखा गया है कि कुछ दूरी का ख़्याल भी नहीं रखते। इसलिए खाने के वक़्त

भी और खाना लेते हुए भी इस बात का ख़ास ख़्याल रखें कि दूरी रखनी है। खाना खाते हुए तो मजबूरी है कि मासिक उतारना पड़ता है लेकिन खाना लेते वक़्त जब लाईन में हों तो मास्क पहन कर रखें। इसी तरह डयूटी वाले कारकुनान भी इस बात को लाज़िमी बनाएँ, यक़ीनी बनाएँ कि मासिक पहन कर हर वक़्त रखना है और कारकुनों ने अगर मास्क पहनने में कोई ढील दिखाई, कमी की या पाबंदी का ख़्याल नहीं रखा तो फिर अतिथि भी अमल नहीं करेंगे। इसलिए डयूटी वाले भी और अतिथि भी इस बात को लाज़िमी बनाएँ कि उन्हों ने मास्क पहन कर रखना है चाहे वे पार्किंग है या ग़ुस्ल-ख़ाने हैं या रास्तों पर चलना है, जलसा गाह है या खाने की मारकी है। जलसा गाह में भी मास्क पहन कर बैठना है। हाँ प्रशासन चैक करने के लिए कई दफ़ा मास्क उतार कर चेहरा दिखाने का कहे तो फिर इस बारे में उन से सहयोग करें। इसी तरह अगर प्रशासन के इंतिज़ाम के अधीन किसी तक़रीर के दौरान कोई नारा लगता है तो इस बात को भी यक़ीनी बनाएँ कि नारा लगाते हुए या उस का उत्तर देते हुए किसी का मासक न उतरे। कुछ बे एहतियाती कर जाते हैं। इस दफ़ा यह एक बिल्कुल नई बात है इसलिए बहुत एहतियात से और तवज्जा से इस बात का ख़्याल रखना होगा। अपने आपको बचाने के लिए भी और दूसरों को बचाने के लिए भी नाक और मुँह दोनों ढाँकने ज़रूरी हैं। फिर गेट में अंदर दाख़िल होते हुए दोनों तरह की चैकिंग होगी। एमज़ कार्ड भी चैक होगा और शायद वैक्सीनेशन का कार्ड और दूसरा आज्ञा पत्र भी देखें, उसको भी चैक करें। इसलिए इस लिहाज़ से भी चैक करने वालों की तसल्ली करवाईं और किसी किस्म का ऐसा इज़हार न करें कि इतनी चैकिंग आपको बुरी लगी है। यह सब सावधानिया शामिल होने वालों के लाभ के लिए की जा रही हैं।

फिर एक और बात जो मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि थोड़ी संख्यां और इन सब इहितयातों की वजह से सैक्योरिटी के लिहाज़ से relax न हो जाएं। इस बारे में डयूटी के कारकुनान को भी और शामिल होने वालों को भी मुकम्मल तौर पर सावधान रहना चाहिए जैसा कि पहले भी हिदायात मिलती थीं और रहते थे।

फिर खाने के बारे में यह भी बता दूं कि दोपहर को तो खाना इन शा अल्लाह खाने की मारकी में दिया जाएगा और वहां इन बातों का ख़्याल रखें जो मैंने बताई हैं लेकिन रात का खाना पैक कर के दिए जाने का उनका प्रोग्राम है। अपने घरों में लेकर जा सकते हैं। कोशिश तो की जाएगी कि जितनी जल्दी तक़सीम हो सके किया जाए लेकिन अगर कुछ वक़्त लग जाए तो परेशान न हों। इसी तरह जलसा सुनने के बारे में भी जो उमूमी हिदायत हर साल होती है वे दोहरा देता हूँ कि जलसा सुनें और एक दूसरे को लंबे अरसा के बाद मिलने की वजह से इधर उधर बैठ कर अज़ीज़ों से या दोस्तों से बातों में व्यस्त न हो जाएं क्योंकि जलसा के लिए आए हैं तो जलसा ही सुनें। इस महामारी की वजह से कुछ लोग बहुत से ऐसे होंगे बल्कि कहना चाहिए जो क़रीबी भी होंगे एक दूसरे के दोस्त भी होंगे और मुख़्तलिफ़ शहरों में रहने की वजह से एक लंबे अरसा के बाद मिल रहे होंगे क्योंकि इस अरसा में जमाअती तौर पर भी कोई फंक्शन नहीं हुए। इसलिए लंबे अरसा के बाद यह मिलना उन्हें जलसा के प्रोग्राम सुनने से वंचित न कर दे या दुआओं की तरफ़ तवज्जा रखने से वंचित न कर दे। जलसा पर आए हैं तो इस से भरपूर लाभ प्राप्त करें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जलसा के दिनों में ज़िक्र-ए-इलाही की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए एक नुक्ता वर्णन फ़रमाया। कहते हैं कि मुझे ख़्याल आया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि जलसे के दिनों में ज़िक्र-ए-इलाही करो और जब मज्लिस में बैठे हों तो वहां ज़िक्र-ए-इलाही होना चाहिए। इस का फ़ायदा ख़ुदा तआला ने यह बताया है कि اُذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ कि अगर तुम ज़िक्र-ए-इलाही करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारा ज़िक्र करना शुरू कर देगा। अब उस बंदे जैसा ख़ुश-क़िस्मत कौन है जिसको अपना आक़ा याद रखे, जिसका ज़िक्र ख़ुदा तआला करे।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद रज़ियल्लाहु अन्हो,भाग 4 पृष्ठ 258)

अत: इन दिनों में ज़िक्र-ए-इलाही अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को मज़ीद खींचने का माध्यम बनता है। इसलिए इन दिनों में खासतौर पर ज़िक्र-ए-इलाही पर-ज़ोर दें और दुनिया में फैले हुए अहमदी जहां इकट्ठे हो कर जलसा सुन रहे हैं या घरवालों के साथ मिलकर जलसा सुन रहे हैं तो वे भी ज़िक्र-ए-इलाही पर तवज्जा दें ताकि ज़्यादा से ज़्यादा हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को खींचने वाले हों। अपनी रुहानी हालत को बेहतर करने वाले हों और दुनिया की आफ़ात से भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल को जज़्ब करते हुए बचने वाले हों।

अत: इस जलसे के माहौल से भरपूर लाभ प्राप्त करने की कोशिश करें, इलमी और तर्बीयती तक़ारीर सुनकर भी और दुआओं की तरफ़ तवज्जा रखकर भी। इस मर्तबा तो थोड़ी संख्यां होने की वजह से हर एक के लिए कुर्सी पर बैठने का इंतिज़ाम है इसलिए लंबा अरसा बैठने का भी कोई बहाना नहीं है। वैसे भी जलसे का एक सैशन कोई इतना लंबा नहीं होता। साधारणता दो अढ़ाई घंटे का या हद तीन घंटे या उस के क़रीब का हो जाता है तो इसलिए अगर ज़मीन पर भी बैठना पड़े तो बैठना कोई मुश्किल भी नहीं है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इक़तिबास में आख़िर में पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं कि "सब साहिबान ध्यान दे कर सुनें। मैं अपनी जमाअत और ख़ुद अपनी ज़ात और अपने नफ़्स के लिए यही चाहता और पसंद करता हूँ कि ज़ाहिरी कथन जो लैक्चरों में होती है उसको ही पसंद न किया जाए और स्मस्स्त उद्देश्य आकर इस पर ही न ठहर जाए कि बोलने वाला कैसी जादू भरी तक़रीर कर रहा है। शब्द में कैसा ज़ोर है। मैं इस बात पर राज़ी नहीं होता। मैं तो यही पसंद करता हूँ और न बनावट और तकल्लुफ़ से बल्कि मेरे स्वभाव और फ़ित्रत का ही यही मांग है कि जो काम हो अल्लाह के लिए हो। जो बात हो ख़ुदा के हो।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 398-399)

फिर फ़रमाया "मुस्लमानों में अदबार और ज़वाल आने की यह बड़ी भारी वजह है अन्यथा इस क़दर कान्फ्रैंसें और अंजुमनें और मजलिसें होती हैं और वहां बड़े-बड़े वक्ता और लैक्चरार अपने लैक्चर पढ़ते और तक़रीरें करते, शायर क़ौम की हालत पर नोहा ख़वानियाँ करते हैं। वह बात क्या है कि इस का कुछ भी असर नहीं होता। क़ौम दिन-ब-दिन तरक़्क़ी की बजाय तनज़्ज़ुल ही की तरफ़ जाती है। बात यही है कि इन मजलिसों में आने जाने वाले इख़लास लेकर नहीं जाते।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 401)

बहरहाल एक बात तो यह है कि हर तक़रीर को सुनें। यह न देखें कि वक्ता अच्छा है, उस की तक़रीर सुननी है किस की नहीं सुननी। हर तक़रीर जलसा में बैठ के सुननी चाहिए और पूरे इख़लास और तवज्जा से सुननी चाहिए और यह इख़लास तभी हासिल होगा जब अल्लाह तआला की प्रसन्नता की तड़प है। और जब यह तड़प होगी तो यही वह हालत है जब हमारी हालतें सँवर सकती हैं। हमारी नसलों को भी सँवार सकती हैं और उनको सही रस्तों पर डाल सकती हैं। इस के लिए हमें कोशिश करते रहना चाहिए। अल्लाह तआला करे कि हम में से हर एक जो इस जलसा में शामिल हो रहा है या सुन रहा है अपने अंदर विशेष इख़लास और वफ़ा पैदा करने वाला बन जाए। और मौसम के लिए भी इन दिनों में दुआ करें कि मौसम हमारे किसी प्रोग्राम में रोक न बने बल्कि अल्लाह तआला इसे हमारे हक़ में कर दे।

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ
Sohail Ahmad Nasir and Family
Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

पृष्ठ 2 का शेष

जो जिहाद का और चंदे देने का यह सवाब है, यह सारा हमें भी मिलेगा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हाँ क्योंकि तुम उनके घर की अच्छी तरह निगरानी करती हो, उनके बच्चों की तर्बीयत करती हो, उनके पीछे उनके घरों को look after करती हो। और फिर जो इस वजह से नेक नसल पैदा हो रही है, तुम्हें भी उतना ही सवाब मिलेगा। और फिर यह भी बर्दाश्त करती हो कि अपने खाविंदों को भेजती हो कि जाओ दीनी ख़िदमत करो। यदि तुम्हारा पति दुनिया की ख़िदमत भी कर रहा है, दीन की नहीं भी कर रहा तो ये भी हदीस में है कि औरत जो है वह अपने घर की निगरान है। तो वक़्फ़ नौ की जो ज़िम्मेदारी है वह यह है कि अपनी नई नसल को अहमदियत पर क़ायम करो और अल्लाह तआला से उस का सम्बन्ध जोड़ो।

प्रश्न : गुलशन-ए-वक़्फ़ नौ लजना और नास्रात सिडनी तिथि 07 अक्तूबर 2013 ई. में एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर से दरयाफ़त किया कि लोग इस्लाम और terrorism को क्यों मिलाते हैं ? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इसका निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

उत्तर : इसलिए कि आजकल जितने terrorist ग्रुप हैं अलक़ायदा, तालिबान, बोको हराम और दूसरे यहां जो नए-नए रोज़ाना निकल रहे हैं उनमें अक्सरीयत मुस्लमानों की है। तो लोग समझते हैं कि शायद इस्लाम और terrorism एक ही चीज़ है। इसी ग़लतफ़हमी को हमने remove करना है। इसी लिए यहां बुक स्टॉल पर एक किताब pathway to peace पड़ी हुई है। मेरे अलग-अलग लैक्चरज़ हैं, जो मैं अलग-अलग लोगों को जा कर देता रहता हूँ कि इस्लाम और terrorism को ना मिलाओ। यह अलग-अलग चीज़ें हैं। वे उनके vested interest हैं जिनको वे कर रहे हैं। वह किताब ख़रीदो (हुज़ूर ने इस किताब की क़ीमत के बारह में संयोग से फ़रमाया कि वैसे यहां महंगी बेच रहे हैं, उनको दो डालर में बेचनी चाहिए, पाँच डालर में सुना है बेच रहे हैं, वाक़िफ़ नौ को तो बहरहाल दो डालर में देनी चाहीए) तो वह ख़रीदो और पढ़ो। इस में तुम्हें मेरे सारे लिखे हुए अलग-अलग उत्तर मिल जाऐंगे कि यह तसव्वुर ग़लत है। इस्लाम तो बड़ी ख़ूबसूरत तालीम है। इस्लाम ने तो जंगों में कभी पहल की नहीं। न कभी terrorism किया है। जब मक्का भी फ़तह हुआ तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सबको माफ़ कर दिया। अपने दुश्मनों को भी माफ़ कर दिया। क़ुरआन-ए-करीम ने ज़ुल्म करने से मना किया है। क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि किसी को बिना कारण के क़तल न करो। यदि एक को क़तल करोगे तो इस का अर्थ है कि तुमने पूरी इन्सानियत को क़तल कर दिया। और ये मुस्लमान जो हैं वे किस को मार रहे हैं ? ईसाइयों को तो नहीं मारते ज़्यादा। ज़्यादा-तर तो मुस्लमान मुस्लमानों को मार रहे हैं, पाकिस्तान में रोज़ जो हमले होते हैं या इराक़ में शीयों को मारते हैं या शीया सुन्नीयों को मार देते हैं। या जगह suicide bombing हो रही है, वे मुस्लमान ही मर रहे हैं। चर्च पर तो अब हमला हुआ है जिसमें सौ दो सौ ईसाई चर्च में मर गए। लेकिन बाक़ी तो मुस्लमानों को ही मार रहे हैं। हम अहमदियों को मारते हैं। या बाक़ी जगह जो बम फटते रहते हैं। तो ये सब terrorist हैं, ख़ुद ही एक दूसरे को मार रहे हैं। जिसकी कहीं भी आज्ञा नहीं है। अल्लाह तआला ने तो क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया है कि तुम आपस में एक दूसरे पर बहुत ज़्यादा रहम करो। और यह मुस्लमानों को ही मार रहे हैं। और एक मुस्लमान को बिना कारण के मारना जो है, अल्लाह तआला कहता है कि जहन्नुम में डालूँगा। तो ये सारे जहन्नुमी बनने जा रहे हैं। अत: इस्लाम और terrorism का कोई जोड़ नहीं है। इसी शब्द से देख लो, इस्लाम का अर्थ peace है। तुम लोग यदि एम.टी. ए सुनते हो और कम अज़ कम वाकफ़ीन नौ को तो ज़रूर सुनना चाहिए। यू.के के जलसा की जो मेरी आख़िरी तक़रीर थी वह यही थी कि इस्लाम क्या चीज़ है और मुस्लमान क्या चीज़ है। और फिर यह किताब लेकर पढ़ो, यह तो इंग्लिश में है, तुम पढ़ लोगे।

(संकलनकर्ता ज़हीर अहमद ख़ान, विभाग रिकार्ड दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी लंदन)

(धन्यवाद् के साथ अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 4 दिसंबर 2020)

प्रश्न : दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में कुछ हदीस जिनमें मर्दों के लिए लोहे की अँगूठी पहनने की मनाही आई थी पेश कर के इस मसला के बारे में हुज़ूर अनवर से मार्गदर्शन चाहा, और इस विषय में नौजवान लड़कों के फ़ैशन के तौर पर हाथों में कड़े इत्यादि पहनने का भी वर्णन किया। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तिथि 14 दिसंबर 2016 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : मैं ने इस बारे में तहक़ीक़ करवाई है। आपकी भिजवाई गई हदीस सुंन अबी दाऊद में वर्णन हुई हैं। जबकि सही बुख़ारी में कुछ ऐसी हदीसे मिलती हैं जिनमें वर्णन है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से फ़रमाया कि वह लोहे की अँगूठी हक़ महर के तौर पर देकर औरत से निकाह कर ले। इसी तरह सुंन अबी दाऊद में यह हदीस भी मौजूद कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अपनी अँगूठी लोहे की थी जिस पर चांदी लिपटी हुई थी।

पूर्व में वर्णित हदीस की तशरीह में उलमाए हदीस ने यह भी लिखा है कि लोहे की अँगूठी की कराहत वाली हदीस कमज़ोर है, तथा यह कि यदि लोहे की अँगूठी पहनना हराम होता तो जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मर्द के लिए सोना पहनना मना फ़रमाया है, इसी तरह लोहे के पहनने की भी स्पष्ट रूप में मनाही वर्णन फ़रमाते।

जबकि नौजवान लड़कों का हाथों में कड़े इत्यादि पहनना तो वैसे ही नापसंदीदा कार्य है इसलिए आपने जो इस बारे में लड़कों को तवज्जा दिलाई है बहुत अच्छा किया है। अल्लाह तआला आपको इस की बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए। आमीन।

प्रश्न : एक मुरब्बी साहब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में तहरीर किया कि ईदैन के अवसर पर कुछ लोग मस्जिदों में आकर ईद से पहले या बाद में नवाफ़िल अदा करते हैं। इस बारे में रहनुमाई की दरख़ास्त है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 14 अक्तूबर 2017 में इन मुरब्बी साहब को जो उत्तर और इस मसले के बारे में इंतिज़ामिया को जो हिदायत अता फ़रमाई वह निमंलिखित है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : ईद की नमाज़ से पहले नवाफ़िल की अदायगी मना है जैसा कि हदीस से भी साबित होता है, लेकिन बाद में यदि वक़्त ममनूआ शुरू न हुआ हो तो घर जा कर नवाफ़िल पढ़े जा सकते हैं, इस में कोई हर्ज नहीं।

मैंने जनरल सैक्रेटरी साहब को भी हिदायत कर दी है कि जो लोग ईद वाले दिन ईद की नमाज़ से पूर्व मस्जिदों में आकर नवाफ़िल अदा करना शुरू कर देते हैं उन्हें उस की मनाही की ओर तवज्जा दिलाने के लिए ईद की नमाज़ से पूर्व मस्जिदों में नियमित ऐलान करवाया करें।

प्रश्न : एक दोस्त ने ईदैन की नमाज़ के वाजिब होने तथा ईद की नमाज़ में इमाम के किसी रकात में तकबीरात भूल जाने और उस के निवारण में सजदा सहू करने के बारे में हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में रहनुमाई फ़रमाने का निवेदन किया। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र 21 नवंबर 2017 ई. में इस प्रश्न का जो उत्तर अता फ़रमाया, वह हसब-ए-ज़ैल है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : ईदैन की नमाज़ सुन्नते मोअक्कदा है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऐसी महिलाएं जिन पर उनके विशेष दिन होने की वजह से नमाज़ फ़र्ज़ नहीं, उन्हें भी ईद-गाह में आकर मुस्लमानों की दुआ में शामिल होने का पाबंद फ़रमाया है और जहां तक इमाम के तकबीरात भूल जाने का प्रश्न है तो ऐसी सूरत में मुक़तदी उसे याद करवा दें, लेकिन मुक़तदियों के याद करवाने के अतिरिक्त यदि इमाम कुछ तकबीरात न कह सके तो मुक़तदी इमाम की ही इत्तिबा करते हुए ईद की नमाज़ अदा करें। तकबीरात भूलने के नतीजा में इमाम को सजदा सहव करने की ज़रूरत नहीं है। (शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-23)

हंगरी तथा अल्बानिया से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

8 जून 2015 ई. दिन सोमवार(शेष रिपोर्ट)

हंगरी से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

हंगरी से एक ईसाई पादरी Gabor Tamas साहब भी जलसे में शामिल हुए। वह पिछले वर्ष भी जलसे में शामिल हुए थे और इस मर्तबा स्वयं फ़ोन कर के पूछा कि क्या में इस वर्ष भी जलसे में शामिल हो सकता हूँ। इस लिए हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की इस अवसर परजब हुज़ूर अनवर ने उनसे पूछा कि आप तो पिछले वर्ष भी आए थे तो बहुत हैरान हुए और कहने लगे कि हुज़ूर तो लाखों लोगों से मिलते हैं फिर किस तरह याद रख लेते हैं। उन्हों ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा कि मैं आप लोगों के जलसे में शामिल हो कर अपने ईमान में एक ताज़गी महसूस करता हूँ। आप लोग बड़ी दिलेरी के साथ संसार और अन्य धर्मों में अमन के क़ियाम में लगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने जो कल अंग्रेज़ी भाषा में भाषण फ़रमाया है वह जहां इन्सानियत को तबाह होने से बचाता है वहां इंसानियत भी क़ायम करता है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हमने सारे संसार में इंसानियत क़ायम करनी हैं। इन्सानी इक़दार क़ायम होंगा तो संसार में अमन सहिष्णुता और भाई चारा क़ायम होगा और संसार अमन का पालना बनेगा।

एक नौ मुबाइअ महिला ने एक माह पूर्व बैअत की थी। वह भी जलसे में शामिल होने के लिए आई थीं। उन्हों ने बताया कि वह स्कूल में हैं। और Organic Chemistry में P.h.D भी कर रही हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो-तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया ख़ुदा तआला आपको बरकत दे और आपकी नेक इच्छाओं को पूरा करे।

हंगरी के दल में एक अफ़्ग़ानी ग़ैर अज़ जमाअत मित्र मुहम्मद अजमल साहब भी शामिल हुए थे। उन का कुछ अरसा पहले ही जमाअत से परिचय हुआ है। जलसा में शमूलियत के बाद कहने लगे कि मुझे तो आपकी जमाअत में कोई ग़ैर मुस्लिमों वाली बात नज़र नहीं आई। यह तो बड़ा प्यार इस्लाम है जो आप लोग प्रस्तुत करते हैं। आप पर जो पाकिस्तान और दूसरी हुकूमतें अत्याचार करती हैं वह पूर्णता नाजायज़ है। हर ओर मुहब्बत है भाई चारा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद पढ़ा जाता है। असल हक़ीक़ी इस्लाम तो आपके पास है।

हंगरी के दल में गाबूर पीटर साहब भी शामिल थे जो धर्म से यहूदी हैं और शिक्षा के विभाग से जुड़े हैं। उन्हों ने बताया कि मैंने यहां जलसे में शामिल हो कर इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा सुनी है। मेरे जीवन का यह महत्वपूर्ण दिन था जमाअत अहमदिया तो प्रत्येक से बात करती है और प्रत्येक से मिलकर काम करना चाहती है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हम सब में जो कॉमन बातें हैं उन पर इकट्ठे हों और सब मिलकर इन्सानियत की क़द्रें क़ायम करें और एक दूसरे की इज़्ज़त करें।

इनके सम्बन्ध में हंगरी के मुबल्लिग़ ने बताया कि जलसे में शामिल होने से पहले जब उनसे इस्लाम और यहूदियत के हवाला से बात होती तो कभी कबार उलटा सीधा वाद- विवाद भी करते। परन्तु हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात के बाद कहने लगे कि आप लोग love for all hatred for none पर केवल ईमान ही नहीं रखते बल्कि मैंने स्वयं देख लिया है कि तुम लोग इस माटो पर अमल भी करते हो। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात के बाद उन्होंने बेहस करना छोड़ दिया और जलसे की दाअवत पर बहुत शुक्रिया अदा किया और कहा कि यदि हंगरी में जमाअत को किसी मामले में सहयोग की आवश्यकता हो तो मुझे ज़रूर बताएं।

★ देश मोरीतानीया से सम्बन्ध रखने वाले एक पुराने अहमदी जो कि हंगरी में रहते हैं वह भी इस दल के साथ आए थे। उन्हों ने बताया कि हंगरी में वह स्टूडैंट के तौर पर आए थे और यहीं रहने लग गए। मेरे लिए सबसे ज़्यादा संतुष्टि का कारण यह बात है कि मैं जमाअत अहमदिया का हिस्सा हूँ। हमारी ख़ुशक़िसमती है कि हम अहमदी हैं और बेहतरीन जगह पर हैं और आज हम कितने ख़ुशनसीब हैं कि हुज़ूर अनवर को देख रहे हैं और हुज़ूर अनवर से बातें कर हैं।

हंगरी से आने वाले दल में एक मित्र इस्माईल साहब शामिल थे। उनका सम्बन्ध वैसे तो बोकीनाफासो से है परन्तु हंगरी में रहते हैं। वह कुछ अरसा पहले बैअत कर के जमाअत में दाख़िल हुए थे परन्तु फिर सम्पर्क में नहीं रहे। अब किसी मित्र के माध्यम से सम्पर्क करके उन्हें जलसा में शामिल होने की दावत दी गई तो वह अपनी बच्चियों की नानी के साथ जलसे में शामिल हुए। उन्हों ने किसी हंगरी की महिला से शादी की थी और उस से दो बेटियां थीं। बच्चियों को इस तरह किसी इस्लामी कान्फ्रैंस में भिजवाना उनकी माँ के लिए सम्भव नहीं था इस लिए बच्चियों की नानी भी साथ आईं और उन्होंने भी जलसा में शमूलियत की।

इस्माईल साहब ने मुलाक़ात के मध्य कहा कि ख़ुदा तआला का शुक्र है कि मैं इस पाक जमाअत से जुड़ गया हूँ और दुनियावी ग़लाज़तों और अन्य फ़िक्रों के आपसी लड़ाई झगड़ों से बचा हुआ हूँ।

हंगरी के मुबल्लिग़ ने बताया कि बच्चियों की नानी मारूमी बार बाला साहबा जो केवल बच्चियों की ख़ातिर आई थीं उन्हें रास्ता में One Community One leader वाली वीडियो दिखाई गई। इस वीडियो का उन पर विशेष प्रभाव हुआ और जलसा गाह पहुंचने से पहले ही अफ़सोस करने लग गईं कि मैं तो अपना सिर ढाँकने के लिए साथ कुछ नहीं लाई। फिर साथ वाली औरतों से स्कार्फ मांगा और जलसा के मध्य और मुलाक़ात के समय अपना सिर ढाँके रखा।

मुलाक़ात के समय ख़ुशी की भावनाओं से बोल नहीं सकीं और इतना शांतिप्रिय और पुरसुकून माहौल देख कर ख़ुदा का शुक्र अदा किया। उन्हों ने कहा कि यहां आकर मेरी जिस संसार से पहचान हुई है अब इस से जुड़े रहने को दिल है।

हंगरी से आने वाले दल की यह मुलाक़ात साढ़े सात बजे तक जारी रही। अंत में दल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दल के सदस्यों को क़लम प्रदान फ़रमाए और बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

Latavia से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

इसके बाद Latavia से आने वाले मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

लेटोया से Hon.Valdis Steins साहब अपनी पत्नी के साथ आए थे। वह तीन मर्तबा देश के सदारती इंतिख़ाबात में हिस्सा ले चुके हैं और उन्हें इलमी और मुल्की ख़िदमात के एतराफ़ में आला सम्मानात से नवाज़ा जा चुका है। वह लेटोया की conservative पार्टी के चेयरमैन भी हैं।

वह लगभग एक वर्ष से जमाअत के सम्पर्क में थे परन्तु उन्हें जमाअत का हक़ीक़ी परिचय तब प्राप्त हुआ जब उन्हें डेढ़ माह पूर्व हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के भाषण पर आधारित पुस्तक और कुछ अन्य पुस्तकें अध्ययन के लिए बतौर भेंट प्रस्तुत की गईं। उन्हों ने इन पुस्तकें का पूर्ण ध्यान से अध्ययन किया और कहा कि इस्लाम का हक़ीक़ी संदेश मुझे अब मिला है। और मैं इस्लामी शिक्षाओं से बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

उन्हों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में कहा कि जलसा के सारे इंतिज़ामात बहुत आर्गेनाईज़ थे। लोग बहुत मुहब्बत से मिले और आपस में भाई चारा ही देखा है। यह बात हैरान करने वाली है कि इतना बड़ा

मजमा है और कोई पुलिस नहीं है और सारे काम आर्गेनाईज़ तरीक़ से हो रहे हैं। ऐसा मंज़र मैंने पहले कभी अपनी जीवन में नहीं देखा। मैं बड़ा हैरान था कि मैं यह क्या देख रहा हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि असल बात यह है कि हम सब इन्सान हैं और हमें आपस के मतभेदों भूल कर इन्सानियत की इक़दार क़ायम करनी चाहिऐं। धर्म में जो कॉमन चीज़ें हैं उन पर सबको इकट्ठा होना चाहिए।

उन्हों ने अर्ज़ किया कि आजकल हमारा मुल्क कर्ज़ों तले दबा हुआ है। आर्थिक दृष्टि से हम ग़ुलाम बन चुके हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप इकनॉमिक सिस्टम के बारे में हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की पुस्तक "The Economic System of Islam" पढ़ीं। इसी तरह "Islam's response to contemporary issues" पढ़ीं?

उन्हों ने अर्ज़ की कि योरपीय यूनीयन जबकि देशों की प्रगति के लिए काम कर रही है परन्तु लेटोया की कोई सहायता नहीं कर रहा। जब सोवीयत यूनीयन में थे तो हम सारे काम manage करते थे। मुल्क को develop करते थे। जब से योरपीय यूनीयन में आए हैं हमारे काम manage नहीं हो रहे और देश develop नहीं हो रहा।

उन्हों ने कहा कि लेटोया में कई यूनीवर्सिटीज़ हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि तालीमी मैदान में UNICEF आपकी सहायता करती है? इस पर उन्हों ने कहा कि वह अपनी मर्ज़ी की रिसर्च पर सहायता करते हैं। जबकि हम आज़ाद देश हैं परन्तु वास्तव में योरपीय यूनीयन के हाथों में ग़ुलाम हैं। मैं अपनी ओर से बहुत प्रयास कर रहा हूँ कि इस स्थिति से अपने देश को निकालूं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अपने देश की सेवा करें और अपने देश को तालीमी मैदान में प्रगति के माध्यम इस स्थिति से बाहर निकालें, तलवार के माध्यम से नहीं।

उनकी पत्नी ने कहा कि वह भी डिप्लोमैटिक सर्विस में रही है और उसने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की पुस्तक Jesus in India पढ़ी है और वह इस बात पर इत्तिफ़ाक़ करती है कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम वफ़ात पा चुके हैं।

मुलाक़ात का यह प्रोग्राम सात बजकर 55 मिनट पर ख़त्म हुआ। इस के बाद मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

रशिया से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार रशिया से आने वाले दल ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दल के सदस्यों का हाल दरयाफ़त फ़रमाया और परिचय प्राप्त किया।

मास्को से ग़स्सान ख़ियात साहब अपनी पत्नी और बेटे अब्दुल्लाह ख़ियात साहब के साथ जलसा जर्मनी में शामिल हुए थे। इस तरह काज़ान (तातारिस्तान) से आदरणीया गुल्नारा साहिबा जलसे में शमूलियत के लिए आई थीं

अब्दुल्लाह ख़ियात साहब ने कहा कि मैं इस समय हॉलैंड की एक यूनीवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त कर रहा हूँ और आर्कीटेक्ट इंजीनियर बन रहा हूँ। साथ इंग्लिश और डच भाषा सीख रहा हूँ मुझे कल बैअत करने का सौभाग्य नसीब हुआ।

उनके के पिता ग़स्सान ख़ियात साहब ने कहा कि मास्को में जमाअत का सैंटर है वह अभी एक फ़्लैट में है और ऐसी जगह है जहां लोग नहीं आ सकते।अब हमें खुली और बड़ी जगह प्राप्त करनी चाहिए।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कुछ प्रशासनिक हिदायात दीं कि वापस जा कर मज़ीद जायज़ा लें और ऐसी जगह देखें जो प्रत्येक दृष्टि से उचित और ठीक हो और ज़्यादा महंगी भी न हो। शहर से बाहर निकल कर जगह देखें और वापस जा कर सारा जायज़ा लेकर बताएं कि क्या सम्भावनाएं हैं और क़ानूनी तौर पर लीगल requirements क्या हैं। जो भी जगह हो वहां यह देखना ज़रूरी है कि सड़क के माध्यम और पब्लिक ट्रांसपोर्ट के माध्यम से सम्पर्क हो। लोग बाआसानी आ जा सकते हों। पानी बिजली और फ़ोन इत्यादि की सहूलयात प्राप्त हों। यह भी जायज़ा लें कि प्लाट की बनने करने में लाभ है या बनी बनाई इमारत प्राप्त करने में है।

उन्हों ने कहा कि जब तक यूकरेन का मसला हल नहीं होता,उस समय तक क़ीमतें नीचे जाएंगी और जब यूकरेन के मामले में अमरीका, रशिया की सुलह होगी तो फिर क़ीमतें ऊपर चली जाएँगी। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपने बिल्कुल ठीक कहा है।

काज़ान (तातारिस्तान) से आने वाली महिला गुलनारा साहिबा ने कहा कि मैं ने 2007 में बैअत की थी। उन्हों ने सबसे पहले काज़ान के मुबल्लग़ीन की ओर से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में सलाम पहुंचाया और उनकी फ़ैमिली के लिए दुआ की दरख़ास्त की। उन्हों ने कहा कि यहां का माहौल बहुत अच्छा था और जलसे के सारे इंतिज़ामात ही बहुत अच्छे थे। मुझे बहुत मज़ा आया।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रशिया के बारे में भविष्यवाणी है कि जमाअत रेत के ज़र्रों की तरह फैलेगी। अब मुझे लगता है कि रशिया में हरकत हो चुकी है और जमाअत के फैलने का आरंभ हो चुका है। आसमान पर अहमदियत का सितारा हरकत में है।

उन्हों ने कहा कि अब दिल करता है कि जलसे पर बार-बार आएं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ज़रूर आएं और बार-बार आएं और अब यू.के. जलसा सालाना पर आएं।

रशियन दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात 8 बजकर 15 मिनट तक जारी रही। अंत में दल के मेंबर उनने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें खिचवाई और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दल के सदस्यों को क़लम प्रदान फ़रमाए।

अल्बानिया से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार मुल्क अल्बानिया से आने वाले दल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

अल्बानिया से इस वर्ष जलसा जर्मनी के लिए 16 लोग पर आधारित दल आया था जिन में सात महिलाओं और एक बच्चा भी शामिल था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दल के सदस्यों से परिचय प्राप्त किया और उनका हाल दरयाफ़त फ़रमाया।

दल के एक मेंबर ने कहा कि मैं टीचर हूँ और पहली दफ़ा जलसे में शमूलियत कर रहा हूँ। मुझे अनुमान नहीं था कि किस किस्म का प्रोग्राम होने वाला है। यहां इतनी बड़ी संख्या और वह भी इतनी मुनज़्ज़म और पुरस्कून कि मैं देख कर हैरान रह गई। इतना बड़ा मजमा हो तो लोग लड़ते रहते हैं परन्तु मैंने किसी को लड़ते नहीं देखा। मैं मर्दों की ओर भी गई और महिलाओं की ओर भी गई परन्तु कोई लड़ाई नज़र नहीं आई। मैं और मेरी बेटी बहुत प्रभावित हुए हैं।

अल्बानिया के एक मित्र Muharram Xhepa साहब ने अपनी भावनाओं का प्रकटन करते हुए कहा :

मैं पहली दफ़ा आया हूँ। जलसा के इंतिज़ामात ग़ैरमामूली थे। हे मुसलमानों के ख़लीफ़ा! यह मेरे लिए अत्यधिक सम्मान की बात है कि विनीत अपने बेटे और बहू के साथ जलसा सालाना में शामिल हुआ है। विनीत अपने घरवालों अरु परिजनों की ओर से हुज़ूर की सेवा में सलाम प्रस्तुत करते हैं और अपने पुर ख़ुलूस नेक भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। मुझे ज्ञान है कि आपकी व्यस्तता बहुत ज़्यादा हैं, परन्तु विनीत दरख़ास्त करना चाहता है कि हुज़ूर समय निकाल कर अल्बानिया तशरीफ़ लाएंगे।

उन्हों ने कहा कि यहां आकर मेरी भावनाएं बदल गई हैं और मैं बहुत ख़ुश हूँ। मैंने इस से पूर्व अल्बानिया के जलसा में भी शमूलियत की थी परन्तु यहां आकर मैंने दिल से जमाअत को स्वीकार कर लिया है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ख़ुदा आपकी भवना को ज़िंदा रखे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप मुझे अल्बानिया आने की दावत दे रहे हैं पहले वहां सौ दो सौ आदमी की जमाअत तो लें।

एक महिला Lindita kosturu साहबा ने बताया कि जलसे के इंतिज़ामात प्रत्येक दृष्टि से मुकम्मल थे और उन में कोई कमी नहीं थी। मैं मर्दों के हिस्सा में भी गई और महिलाओं के हिस्सा में भी परन्तु प्रत्येक जगह समस्त इंतिज़ामात प्रत्येक दृष्टि से बेहतरीन नज़र आए।

एक मित्र Ervin Xhepa साहब अपनी पत्नी के साथ जलसे में शामिल हुए

थे। ये दोनों ला (क़ानून) के विभाग से सम्बंधित हैं। जबकि उनकी पत्नी ने जलसा में शमूलियत से पहले बैअत नहीं की थी परन्तु अलहमदु लिल्लाह जलसा में शामिल हो कर और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के मध्य ही उन्होंने अहमदियत को स्वीकार करने का ऐलान किया। उन्हों ने वर्णन किया कि जलसा सालाना के अनुवभ अत्यधिक ग़ैरमामूली थे। जिस मुहब्बत इख़लास और बेलौस सेवा का प्रदर्शन उन्हों देखा है इस का उनके दिल-ए-पर ग़ैरमामूली प्रभाव हुआ है।

उनके सम्बन्ध में जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को ज्ञान हुआ कि उन्होंने अभी तक बैअत नहीं की हुई तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि एक वकील को क़ायल करने के लिए दलायल की आवश्यकता होती है। इस लिए आपके पति को चाहिए कि आप को मज़बूत दलायल के साथ क़ायल करें। पति की दलील ज़्यादा फ़ौक़ियत वाली होनी चाहिए। इस पर उन्हों ने कहा कि मेरे पति ने अहमदियत के सिलसिले में मुझे बहुत तब्लीग़ की है और मैं पर्याप्त अरसा से अपने दिल में अहमदियत स्वीकार कर चुकी थी। यहां आकर बहुत प्रभाव हुआ है और आज मैं पूर्ण विश्वास से और सिदक़ दिल से इक़रार करती हूँ कि मैं अहमदी हूँ और जमाअत अहमदिया में शामिल होती हूँ। और वह निरन्तर रो रही थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने उनके पति को संबोधित करते हुए फ़रमाया कि अपनी प्रैक्टिस के एक केस की आमद का दस प्रतिशत हिस्सा अपनी पत्नी को इस के अहमदी होने की ख़ुशी में भेंट कर दें।

एक मित्र ने कहा कि मैं टीचर हूँ और जलसे में पहली दफ़ा आया हूँ यहां की मेहमान-नवाज़ी और ख़ुलूस ने मेरे दिल को जीत लिया है। मैंने अपने जीवन में पहली दफ़ा ऐसे भावनाओं को महसूस किया है। आइन्दा वर्ष मैं इन शा अल्लाह मज़ीद मित्रों को साथ लेकर आऊँगा।

एक मित्र इब्राहीम तरवशिला साहब ने भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिलकी मुलाक़ात के मध्य ही जमाअत अहमदिया में दाख़िल होने का ऐलान किया। उन्हों ने बताया कि जबकि मैं एक लंबे अरसा से जमाअत से परिचित हूँ और जमाअती प्रोग्रामों में शामिल होता रहता हूँ परन्तु मैंने कभी बैअत नहीं की। जबकि मैंने यह फ़ैसला करने में पर्याप्त देर की है परन्तु अभी भी मेरे पास समय है। इस लिए आज मैं पूरे विश्वास के साथ जमाअत अहमदिया में शामिल होने का इक़रार करता हूँ। उन्हों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में दुआ की दरख़ास्त करते हुए कहा कि अल्लाह तआला मुझे मुख़लिस और बाअमल अहमदी बनाए और उन अहमदियों जैसा बनाए जिन्हें मैंने जलसा सालाना जर्मनी के मध्य सेवा और क़ुर्बानियां करते देखा है। बे-शक जमाअत अहमदिया का प्रस्तुत किया हुआ इस्लाम ही हक़ीक़ी और सच्चा इस्लाम है। जिस की सदाक़त को जमाअत अहमदिया प्रस्तुत करती है वह प्रत्येक दृष्टि से ग़ालिब है और जमाअत सच्ची है। मुझे जलसा के माहौल में एक ग़ैरमामूली रूहानियत को महसूस करने का अवसर मिला। मैं आशा रखता हूँ कि एक मुख़लिस अहमदी बनूँगा और उन अहमदियों की तरह बनूँगा जिनको यहां सेवा करते हुए देखा है। मैंने यहां देखा है कि समस्त इंतिज़ामात सेवकों द्वारा थे। अहमदी नौजवानों का यह हौसला, ये जोश और अज़्म और कामिल इताअत इस बात की तसदीक़ करता है कि यह जमाअत सच्ची है।

अल्बानियन दल में शामिल एक मित्र Hatem Nako साहब अपनी पत्नी के साथ जलसा में शामिल हुए थे। उन्हों ने जलसे के सम्बन्ध में अपने विचारों का प्रकटन करते हुए बताया कि मुझे जलसे में आने से पहले अनुमान नहीं था कि यह किस किस्म का समारोह होगी परन्तु यहां आकर मुझे ख़ुशखुलक़ी मेहमान-नवाज़ी और हुस्न-ए-सुलूक के उच्च आचरण देखने का अवसर मिला। मेरी इच्छा है कि आइन्दा वर्ष मैं अपने दूसरे मित्रों को भी इस रुहानी जलसा में लाऊं।

एक महिला Mimoza koxhaj साहबा ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए वर्णन किया कि यहां आने से पूर्व मुझे अनुमान नहीं था कि यह जलसा किस प्रकार का है। परन्तु यहां आकर जलसा में जमाअत अहमदिया के माध्यम प्यार, मुहब्बत और मेहमान-नवाज़ी के उदाहरण देखने को मिले। जलसा के समस्त इंतिज़ामात प्रत्येक रूप से मिसाली और पूर्ण थे।

मुलाक़ात के मध्य उन्हों ने कहा कि चूँकि मैं Economist हूँ इस लिए प्रत्येक चीज़ को बहुत बारीकी से देखती हूँ और इस का मुहासिबा करने का प्रयास करती हूँ। आपकी मुहब्बत और इख़लास से ही मुझे हौसला हुआ है कि अर्ज़ करूँ कि जलसे के इस खाने का ज़या होता है। जहां इंतिज़ामात में इस क़दर बेहतरी है तो वहां इस नुक़्सान को भी होने से बचाया जा सकता है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जलसे के इंतिज़ामात बहुत बड़े पैमाने पर होते हैं जिसके कारण से इस किस्म की कमियों का होना ऐन-मुमकिन है लोगों की आदात भी एक जैसी नहीं होतीं। कुछ रोटियों के किनारे छोड़ देते हैं तो कुछ अन्य कच्ची रोटी देखकर उस का कुछ हिस्सा फेंक देते हैं। बहर हाल प्रयास किया जाती है कि खाना ज़ाए न हो और बचे हुए खाने को सँभाला जाए। हमें ख़ुराक को ज़ाए होने से बचाना चाहिए और उन ग़रीबों का ख्याल रखना चाहिए जिनको खाना नहीं मिलता। हुज़ूर अनवर ने उनका का शुक्रिया अदा किया कि और फ़रमाया कि आपने हमारी कमज़ोरी की ओर ध्यान दिलाई है। इसी तरह इस्लाह होती है तथा फ़रमाया कि मैं हमेशा जमाअत के लोग को उनकी कमज़ोरीयों की ओर ध्यान दिलाता रहता हूँ क्योंकि इसी तरीक़ पर इस्लाह होती रहती है।

अल्बानिया के दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात आठ बजकर 45 मिनट पर ख़त्म हुई। अंत में दल के समस्त सदस्यों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिलके साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक दल के सदस्यों को क़लम प्रदान फ़रमाए और बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए :

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

इस जगह एक बहुत बड़ा नुक्ता वर्णन फ़रमाया गया है वह यह कि मलायका का कलाम इन्सान के क़लब के अनुसार होता है जैसा इन्सान होगा वैसे ही उस के इल्हाम होंगे। आम तौर पर लोग यह समझते हैं कि इल्हाम हो गया तो हम बड़े आदमी हो गए हालाँकि यह काफ़ी नहीं क्योंकि इल्हाम इन्सान की अपनी फ़ित्रत के अनुसार ही हुआ करता है। क़ादियान में एक पहाड़ी शख़्स मज़दूरी इत्यादि के उद्देश्य से आया करता था वह उमूमन हमारे हाँ ही मज़दूरी इत्यादि करता था कभी कबार किसी काम के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के पास चला जाता तो हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल उसे नमाज़ की ताकीद फ़रमाया करते थे जिस पर वह उत्तर दिया करता कि "नमाज़ सानू पचदी नहीं"(अर्थात हमारे मुनासिब-ए-हाल नहीं) संयोग से एक दिन आपने उसे मस्जिद में नमाज़ पढ़ते देखा। फ़राग़त के बाद पूछा क्या बात है ? तो उसने जवाब दिया आज मुझे इल्हाम हुआ है कि "उठ ओए सूरा नमाज़ पढ़" हे सूअर उठ नमाज़ पढ़। इस लिए मैंने नमाज़ शुरू शुरू कर दी है। अब ज़ाहिर है कि यह इल्हाम शैतान की तरफ़ से तो हो नहीं सकता। यह यक़ीनन ख़ुदाई इल्हाम था परन्तु उस के दर्जा के अनुसार था। अत: ख़ाली इल्हाम को नहीं देखा जाएगा बल्कि यह देखा जाएगा कि इस इल्हाम के अंदर अल्लाह तआला की तरफ़ से क्या मुहब्बत का भी इज़हार है या उस बंदे की शान के इज़हार की भी कोई सूरत है।

इस आयत से एक आम क़ानून का पता चलता है और वह यह कि फ़रिश्ते हक़ के साथ नाज़िल हुआ करते हैं। यह अमर ज़ाहिर है कि मौमिनों में अदना, आला, मामूर इत्यादी मामूर सब ही शामिल हैं। इसी तरह नबियों में मर्तबा का अंतर पाया जाता है। हज़रत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इसी तरह नबी कहलाते हैं जिस तरह ज़कारीया, इलयास और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम। अत: जिस तरह दर्जा में नाम की शिरकत सबको बराबर नहीं बना देती इसी तरह सबकी वह्यी, वह्यी कहलाकर एक समान नहीं हो सकती। हर एक नबी का कलाम उसकी शान के अनुसार होगा। इस असल को मद्द-ए-नज़र रखें तो यह प्रश्न भी हल हो जाता है कि तौरात, इंजील, ज़बूर, इत्यादि क्यों क़ुरआन-ए-करीम की तरह बेनज़ीर नहीं। जिन नबियों पर वह कलाम नाज़िल हुए उन्ही की शान के अनुसार उनमें ख़ुदा तआला ने बरकत रखी। यह किस तरह हो सकता था कि अल्लाह तआला मुख़्तलिफ़ दर्जों के काम मुख़्तलिफ़ नबियों को सपुर्द करता लेकिन सामान सबको एक सा देता। बहर हाल काम के अनुसार ही उसने सामान देने थे और काम के अनुसार ही उसने सेवक निर्धारित करने थे।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 5 पृष्ठ 13 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

Virtual क्लास

नैशनल मजलिस-ए-आमला जमाअत अहमदिया स्वीडन की हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

मूसी (वसीयत करने वाले) को पाँच वक़्त का नमाज़ी होना चाहिए, प्रतिदिन कुरान-ए-करीम की तिलावत करने वाला होना चाहिए,

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों को पढ़ने वाला होना चाहिए, समय के खलि़फ़ा की बातों को सुनने वाला होना चाहिए, समय के खलि़फ़ा के ख़ुतबात को बाक़ायदगी से सुनने वाला होना चाहिए

नैशनल आमला को सबके लिए उदाहरण होना चाहिए, आपकी जमाअत के मैंबरान, नैशनल आमला को अपना रोल मॉडल समझें, नैशनल आमला को तवज्जा होनी चाहिए कि आपने लोगों को क्या उदाहरण दिखाने हैं

नौजवानों को समझाएँ कि यदि तुमने अहमदियत को सच्चा माना है, बैअत की है तो फिर तुम ओहदेदार को न देखो, ये देखो कि सही शिक्षा क्या है और समय का खलि़फ़ा तुम्हें क्या कहता है, ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ रखों तो ठीक रहोगे । (भाग 2 अन्तिम भाग)

★.... हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी तब्लीग़से फ़रमाया कि तब्लीग़ का टार्गेट होना चाहिए। स्वीडन में विभिन्न क़ौमों के अफ़राद हैं। अरब भी काफ़ी आ चुके हैं। एशीयन भी हैं, अफ्रीकन भी हैं। लोकल स्वीडिश हैं। हर एक के लिए उनकी क़ौमीयत के लिहाज़ से प्रोग्राम बनाएँ और फिर उनकी दिलचस्पी के अनुसार, उनके प्रश्नों के अनुसार आपके पास लिटरेचर भी हो फ़रमाया : जब तक आपकी इन्फ़िरादियत नहीं होगी, अलग पहचान नहीं होगी, लोगों को पता नहीं होगा कि अहमदियत क्या चीज़ है और इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम किया है। लिटरेचर और पमफ़लेट इत्यादि जो आप तक़सीम करते हैं, आपके मुरब्बी साहिब की भी रिपोर्टों में आया होता है कि हमने इतने लाख तक़सीम कर दिए, वे इतने लाख तक़सीम करने के बाद भी लोगों को परिचय नहीं है। इस के बारे में भी पता होना चाहिए ताकि इस्लाम के बारे में ग़लत-फ़हमियों को दूर कर सकें। अब जो एक व्यक्ति खड़ा हुआ है कि क़ुरआन जला दूंगा। ठीक है कि पुलिस ने उस को आज्ञा नहीं दी लेकिन साथ ही अपील करने का भी हक़ दे दिया और उस के कुछ सथियों या ग्रुप के लोगों ने कल रात को पार्क में जा कर जला भी दिया। तो यह क्यों हो रहा है? इसलिए कि उनको पता ही नहीं है कि इस्लाम की तालीम क्या है और क़ुरआन-ए-करीम की तालीम क्या है। मुस्लमानों के जो दहशतगर्द कर्म हैं, वे यही ज़ाहिर करते हैं कि शायद यह क़ुरआन में ही होगा। वे एक आयत को तो पकड़ लेते हैं कि क़िताल करो या जंग करो। लेकिन जो जंग की शर्तें हैं या अन्य अख़लाक़ी तालीमात हैं, उनको नहीं देखते। ये चीज़ें उन लोगों को पता होनी चाहिऐं। इस लिहाज़ से भी आप तब्लीग़ का प्लान बनाएँ।

★.... नैशनल सैक्रेटरी वक़्फ़ नौ को हिदायत देते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : असल चीज़ तो यह है उन्हें encourage करें कि हमें डाक्टरज़ चाहिऐं, टीचरज़ चाहिऐं। इन फ़ील्डज़ में ज़्यादा encourage करना चाहिए। जामिआ में पढ़ने वाले स्वीडन से केवल दो लड़के हैं। वे भी एक ही फ़ैमिली के हैं। बाक़ी फ़ैमिलीज़ को भी तवज्जा दिलाएँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जिसको मैं इजाज़त देता हूँ, उस को साथ यह भी कहता हूँ कि अपना काम करो और साथ ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त जमाअती ख़िदमत में गुज़ारो। वालेंटियर करते रहो। समस्त वीकऐंड जमाअत को दो और इस के अतिरिक्त भी जो ज़ायद वक़्त है वह जमाअत के लिए दो। और जो बिल्कुल ही काम नहीं करता, दुनियादारी में डूब गया है तो उस की मर्कज़ को सूचना दें ताकि इस से वक़्फ़-ए-नौ का टाइटल ख़त्म किया जाए। हमने टाइटल तो नहीं रखना। संख्यां बढ़ा कर हमने क्या करना है? वक़्फ़-ए-नौ तो वही है जिसको यदि हम इजाज़त भी देते हैं, तब भी वे दुनिया का काम करते हुए भी वक़्फ़ की रूह के साथ अपने आपको वालेंटियर के तौर पर पेश करे। बहुत सारे लोग हैं जो दीन का काम करते हैं लेकिन वक़्फ़ नहीं करते हैं। उनमें दीन की ख़िदमत का ऐसा जज़बा है कि लगता है कि चौबीस घंटे दीन को ही दिए हुए हैं।

मीटिंग की बात पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : उन लोगों से भी मीटिंग करें जो जॉब कर रहे हैं। उन्हें तवज्जा दिलाएँ कि तुम वक़्फ़-ए-नौ हो, जमाअत के लिए वक़्त दो। और कुछ नहीं तो वीकऐंड पर तब्लीग़ के लिए वक़्त दो। जा कर लिटरेचर तक़सीम करो, पमफ़लेट तक़सीम करो, स्टॉल लगाओ, Ask a muslim वाले प्रोग्राम में शिरकत करो। वाक़फ़ात-ए-नौ के अतिरिक्त भी वाक़फ़ीन-ए-नौ की काफ़ी संख्यां है, इन सारों को प्रोग्रामों में शामिल करो।

★ नैशनल सैक्रेटरी वसाया से विभिन्न बैटन के पूछने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया केवल चंदा उद्देश्य नहीं है कि वसीयत करवाली और संख्यां बढ़ा ली। उनके तक़्वा के मयार बढ़ाने के लिए भी कोई कोशिश की है?

फ़रमाया : मूसी को पाँच वक़्त का नमाज़ी होना चाहिए, प्रतिदिन कुरान-ए-करीम की तिलावत करने वाला होना चाहिए, कुरान-ए-करीम का अनुवाद जान के उन आदेशों पर अमल करने वाला होना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों को पढ़ने वाला होना चाहिए। समय के खलि़फ़ा की बातों को सुनने वाला होना चाहिए। समय के खलि़फ़ा के ख़ुतबात को बाक़ायदगी से सुनने वाला होना चाहिए, अपने घर में अपने बीवी बच्चों की तर्बीयत की तरफ़ तवज्जा होनी चाहिए। यह विशेषताएं मूसी में होती हैं। फिर यदि महिलाएं हैं तो उनको अपने पर्दा के मयार को बेहतर करना चाहिए और दोनों को अपने अख़लाक़ बेहतर करने चाहिऐं। एक आईडीयल मूसी तो वह है जो माली क़ुर्बानी के लिहाज़ से भी और अपनी दीनी हालत के लिहाज़ से भी, रुहानी हालत के हिसाब से भी, जमाअती और प्रशासनिक सम्बन्धों के लिहाज़ से भी, ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ के लिहाज़ से भी आला मयार का होना चाहिए। तब ही वसीयत का फ़ायदा है, नहीं तो केवल पैसे इकट्ठे करने के लिए तो हमने वसीयत नहीं करवानी।

★ हुज़ूर अनवर ने नैशनल आमला के मैंबरान को नसीहत करते फ़रमाया : नैशनल आमला को सब के लिए उदाहरण भी होना चाहिए। आपकी जमाअत के मैंबरान, नैशनल आमला को अपना रोल मॉडल समझें। नैशनल आमला को तवज्जा होनी चाहिए कि आपने लोगों को क्या उदाहरण दिखाने हैं।

★ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नैशनल सैक्रेट-री माल से बात चीत करते हुए चंदा देने वालों के विषय में फ़रमाया कि यदि माली हालात ऐसे हैं कि चंदा नहीं दे सकते तो फिर इजाज़त ले लें कि हम चंदा नहीं दे सकते, मुझे लिख दें, लेकिन ग़लत वर्णनी करके अपनी आमद कम न लिखवाएं फ़रमाया: जमाअत अहमदिया यह कहती है कि चंदा एक माली क़ुर्बानी है। क़ुर्बानी का अर्थ ही तकलीफ़ में पड़ना है। लेकिन अपने बीवी बच्चों का भी हक़ अदा करना है और यदि तुम समझते हो कि तुम हक़ अदा नहीं कर सकते तो फिर तुम इस में छूट ले लू। लेकिन ग़लत वर्णनी न करो। यदि ग़लत वर्णनी करोगे तो अल्लाह तआला उस पैसे में बरकत नहीं डालता।

★ इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नैशनल सैक्रेटरी तालीमुल-क़ुरआनऔर वक़्फ़-ए-आरिज़ी से पूछा कि इस साल के दौरान कितने लोगों ने वक़्फ़-ए-आरिज़ी की है? इस पर सैक्रेटरी साहिब ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर चार लोगों ने वक़्फ़-ए-आरिज़ी की है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि बस? आमला के मैंबरान से ही वक़्फ़-ए-आरिज़ी करवा लेते तो आपकी संख्यां बढ़ जाती, कम अज़ कम पंद्रह बीस तो हो जाती। आप बाहर से जो लेते हैं, आमला से तो लें। चिराग़ तले अंधेरा। आमला के मेंबर्स तो वक़्फ़-ए-आरिज़ी किया करें। आपने ख़ुद वक़्फ़-ए-आरिज़ी की थी? इस पर सैक्रेटरी साहिब ने अर्ज़ किया कि नहीं की। इस पर फ़रमाया कि यदि आप ने ख़ुद वक़्फ़-ए-आरिज़ी नहीं की तो लोगों ने क्या उदाहरण देखना है आपका? आप ख़ुद भी दो हफ़्ते की वक़्फ़-ए-आरिज़ी करके कहीं तब्लीग़ करने के लिए जाएं या बच्चों को कुरान-ए-करीम पढ़ाऐं या कोई और काम करें। आमला वाले लोगों पर रोब डालते रहते हैं, ख़ुद भी तो काम किया करें। वक़्फ़-ए-आरिज़ी ख़ुद भी करें, फिर आपके उदाहरण से दूसरे लोग भी करेंगे। क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने के हवाले से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यू.के. से इंटरनैशनल क्लास का प्रोग्राम बनाया जा रहा है लेकिन हर मुल्क को अपना अपना प्रोग्राम भी बनाना चाहिए।

★ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नैशनल सैक्रेट-री शिक्षा से फ़रमाया कि स्टूडैंटस के कोई सैमीनार इत्यादि भी आयोजित किया करें।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 9 September 2021 Issue No.36

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

धर्म और वर्तमान के हालात के इशूज़ पर सैमीनारज़ हों, किसी को कोई टॉपिक दें, तक़रीर तैयार करें ताकि उन पढ़े लिखे लड़कों में जमाअत से ताल्लुक़ का शौक़ पैदा हो और उन्हें इलम कि contemporary issues के हवाला से इस्लाम क्या कहता है? विज्ञान के विभिन्न विषयों के हवाला से इस्लाम क्या कहता है। इन विषयों पर कैसे बात करनी है, कैसे डील करना है। इस से दिलचस्पी पैदा होगी और लोग आपके साथ attach होंगे सैक्रेटरी रिश्ता नाता से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यदि अहमदी लड़के बाहर शादियां करने लग जाएँगे तो फिर अहमदी लड़कियां कहाँ जाएँगी? अहमदी लड़कियों की भी कोई फ़िक्र करें। अहमदी लड़कियों के रिश्ते करवाने की फ़िक्र करें। इस तरफ़ ज़्यादा तवज्जा दें।

★ सदर मजलिस खुद्दामुल अहमदिया ने अर्ज़ की कि हुज़ूर यहां के जो बच्चे हैं, वे धर्म से दूरी इख़तियार कर रहे हैं, उनको कैसे धर्म के क़रीब लाएंगे। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि उनके दिलचस्पी के सामान पैदा करें। उनको क़रीब लाएंगे। दूरी इसलिए इख़तियार कर रहे हैं कि उनके अमल और उनकी बातों में विरोधाभास है। उनकी तर्बीयत करें। इसलिए मैं कहता हूँ कि बड़ों की तर्बीयत करें। नैशनल आमला की तर्बीयत करो, अपनी स्थानीय आमला की तर्बीयत करो ताकि बच्चे उनके उदाहरण देखकर अपनी इस्लाह करें। और खुद्दामुल अहमदिया का यह काम है कि उनको समझाएँ कि तुमने न किसी ओहदेदार की बैअत की हुई है न उस से तुम्हारा कोई ताल्लुक़ है। यदि तुमने अहमदियत को सच्चा माना है, बैअत की है तो फिर तुम उनको न देखो। ये देखो कि सही शिक्षा किया है और समय के खलिफ़ा तुम्हें क्या कहता है। ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ रखो तो ठीक रहोगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : दूसरा यह कि तर्बीयत की कमी है, नमाज़ों की कमी है। जो contemporary issues हैं, उनकी इन विषयों पर आपस में मीटिंग करवाया करें। केवल टकसाली किस्म के इज्लासात न करवाते रहें बल्कि यह देखें कि नौजवान जो पढ़ा लिखा वर्ग है, उनके क्या मसायल हैं। उनको किस तरह attract करके आप क़रीब ला सकते हैं। विभिन्न विषयों पर उनके सैमीनारज़ आयोजित करवाएं। उनकी दिलचस्पी के सामान पैदा करें ताकि कुछ न कुछ attachment हो। जब क़रीब आएँगे तो उनको साथ साथ धर्म की शिक्षा भी देते रहें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया धर्म से दूरी इसलिए है कि दुनिया-दारी पैदा हो रही है। दुनिया में साधारणत: हर जगह दुनियादारी का रुजहान है। केवल स्वीडन की बात नहीं है, हर जगह यही हाल है। उनको कहो कि अल्लाह तआला पर यक़ीन है तो फिर अल्लाह तआला के आदेशों पर भी अमल करने की कोशिश करनी चाहिए और इस ज़माना में जो आदेश हैं उन पर अमल करें। यदि बड़े कोई काम सही नहीं कर रहे तो नौजवानों का काम है कि उस को सही करें और आगे आएं ताकि हमारी आइन्दा नसलें संभाली जाएं। उन पर ज़िम्मेदारी डालें, उनको एहसास दिलाएँ कि तुम ज़िम्मेदार बनो, न यह कि किसी बड़े के ग़लत व्यवहार को देखकर अपने दीन से हट जाओ। फ़रमाया : इस हवाला से एक प्लान बनाएँ, पढ़े लिखे लड़कों की एक कमेटी बनाएँ और फिर ग़ौर करके स्कीम बनाएँ कि किस तरह उनको क़रीब किया जा सकता है। जब वे स्कीम बन जाए तो फिर मुझे फ़रमाया : मुबल्लग़ीन का भी काम है कि नौजवानों से ताल्लुक़ रखें। ज़्यादा से ज़्यादा नौजवानों को क़रीब लाने की कोशिश करें। खुद्दामुल अहमदिया और मिशनरी इंचार्ज आपस में सहयोग से एक स्कीम बनाएँ। मुबल्लग़ीन को इस में शामिल करें और अमीर जमाअत भी अपना मुकम्मल सहयोग उनको दें। विभाग तर्बीयत भी शामिल हो। बाक़ी ज़ेली तन्ज़ीमों को भी इस में शामिल करें। सदर खुद्दामुल अहमदिया, सदर अंसारुलल्लाह और सदर लजना भी।

★ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ऐडीशनल सैक्रेटरी तर्बीयत और वक़्फ़-ए-जदीद बराए नौमुबाईन को हिदायात देते हुए फ़रमाया नौमुबाईन के लिए तर्बीयत का प्रोग्राम बनाएँ ताकि तीन साल के बाद वे मेन स्ट्रीम में शामिल हो जाएं। यदि कोई ग़ैर मुस्लिम बैकग्रांऊड से आया है तो उसे मालूम हो कि नमाज़ क्या है, सूरत फ़ातिहा क्या है, कुरान-ए-करीम किस तरह पढ़ना है। उनकी

पृष्ठ 1 का शेष

इस तरह तर्बीयत होनी चाहिए। जमाअत क्या है, जमाअत का निज़ाम क्या है। ख़िलाफ़त क्या है, ख़िलाफ़त से किस तरह ताल्लुक़ रखना है, यह सही तरह इलम होना चाहिए। फिर चंदों का निज़ाम क्या है और इस में किस तरह शामिल होना चाहिए। यह समस्त ट्रेनिंग तीन साल के अंदर हो जानी चाहिए। उनके इजतिमा भी करते रहें।

★ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-जदीद से फ़रमाया कि आप दफ़्तर इतफ़ाल की तरफ़ भी तवज्जा करें। खुद्दामुल अहमदिया और लजना की मदद से बच्चों और बच्चियों को भी वक़्फ़-ए-जदीद की तरफ़ तवज्जा दिलाएँ।

★ तब्लीग़ के हवाला से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इन दिनों में तो ऑनला-इन तब्लीग़ बहुत शुरू हो गई है। वट्स ऐप पर, सोशल मीडीया पर। यहां देखें कि लोगों के पास क्या-क्या सवाल हैं, क्या-क्या इशूज़ उठते हैं। विभिन्न साईटस में जाकर उन्हें बताएं कि इन हालात में हमें अल्लाह तआला की तरफ़ ज़्यादा झुकना चाहिए। अल्लाह तआला की तरफ़ आना चाहिए और अपने स्रष्टा की पहचान करनी चाहिए। न यह कि दहरिया बन जाएं और ख़ुदा तआला को छोड़ दें। या ये समझें कि ख़ुदा तआला दुआएं क़बूल नहीं करता या ख़ुदा तआला नहीं है, या दुनिया ही सब कुछ है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यदि दुनिया को बचाना है तो यह करो, क्योंकि इस के बाद फिर जो क्राइसेस आएगा, इस महामारी के बाद जब दुनिया की इकॉनोमी shrink होती जाएगी तो अगला क्राइसेस आएगा कि दुनिया एक दूसरे के माल पर क़बज़ा करने की कोशिश करेगी। जब एक दूसरे के माल पर क़बज़ा करने की कोशिश करेंगे तो फिर जंगें शुरू हो जाएँगी। जिस के लिए बलॉक बनते हैं। और बलॉक बनने शुरू हो चुके हैं। तो इस से बचने का यही तरीक़ा है कि ख़ुदा की तरफ़ आओ और अपनी ज़िम्मेदारियों को समझो। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : तो ऑनलाइन माध्यमों से तब्लीग़ करें और जब अवसर मिलता है, जहां-जहां अवसर मिलता है यह सन्देश पहुंचाएं। लॉक डाउन में इस तरीक़ को इख़तियार करें और जब लॉक डाउन में नरमी हो और ज़रा सी कोई खिड़की खुले और रोशनी नज़र आए तो बाहर निकलें और तब्लीग़ करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जो कुछ ज़रूरी बातें थीं वे मैंने कह दी हैं। उनके अनुसार अपनी पालिसी बनानी चाहिए और अमल करवाना चाहिए। हर वक़त याद रखें कि अल्लाह तआला हमारी हर कथनी और करनी को देखता और सुनता है। इसलिए हमने हर काम अल्लाह तआला की ख़ातिर करना है। और इस के लिए अपनी समस्त प्रतिभाओं, समस्त potentials को इस्तिमाल में लाना है, ताकि हम जमाअत के सही, सक्रिय मेम्बर भी बन सकें और जमाअत की सही रंग में ख़िदमत भी कर सकें। अल्लाह तआला आपका हाफ़िज़-ओ-नासिर हो। अस्सलामु अलैकुम विरहमतुल्लाही वबरकातहु।

(रिपोर्ट अब्दुल माजिद ताहिर, ऐडीशनल वकील तबशीर् इस्लामाबाद, यू.के.)

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 30 अक्तूबर2020)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad